शाश्वत ऊर्जा

इरेडा
IREDA

एक बार इरेडा, सदैव इरेडा

(नवरत्न सीपीएसई)

अक्षय क्रांति

(ई-पत्रिका)

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड

(भारत सरकार का प्रतिष्ठान)

अक्षय क्रांति

संरक्षक
श्री प्रदीप कुमार दास
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

परामर्शदाता
श्रीमती माला घोष चौधुरी
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादक
श्रीमती संगीता श्रीवास्तव
प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा)

सहसंपादक
श्री आलर कुल्लू , उप प्रबंधक (राजभाषा)
सुश्री तुलसी, वरिष्ठ निजी सचिव (हिंदी)

क्र.सं.	विषय	रचना वर्ग	लेख रचिता श्री/सुश्री	पृष्ठ संख्या
1.	संदेश	–	अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, इरेडा	3
2.	वो	कविता	संगीता श्रीवास्तव, प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा)	4
3.	डिजिटल डिटॉक्सः आधुनिक युग की आवश्यकता	लेख	पीयूष अग्रवाल, प्रबंधक (वित्त तथा लेखा)	5-6
4.	नवीकरणीय ऊर्जा और सतत् विकास की ओर अग्रसर भारत	लेख	रोमेश कुमार गुप्ता, प्रबंधक (वित्त तथा लेखा)	7-10
5.	अनेकता में एकता	लेख	गुंजन महानी, उप प्रबंधक (वित्त तथा लेखा)	11-12
6.	योग	लेख	रिजवान अतहर, उप प्रबंधक (सचि.)	13-15
7.	मेरी प्यारी दिल्ली	लेख	आलर कुल्लू, उप प्रबंधक (राजभाषा)	16-17
8.	अक्षय ऊर्जाः हमारी जिम्मेदारी	लेख	गौरव वार्ष्णेय, उप प्रबंधक (वित्त तथा लेखा)	18-19
9.	प्रदूषण	लेख	हजारी लाल, प्रोटोकॉल अधिकारी	20-21
10.	असली स्वच्छता है– मन की स्वच्छता	लेख	चन्द्रकला मिश्र, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.–राजभाषा), बीएचईएल	22-24
11.	हिंदी भाषा का महत्त्व	लेख	राजेश मिश्रा, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी, इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड	25-27
12.	नया दौर	लेख	रमेश चंद, मुख्य प्रबंधक –राजभाषा हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड	28-31
13.	पर्यटन की दृष्टि से मिर्जापुरः एक अवलोकन	लेख	सत्येन्द्र कुमार दूबे, हिंदी अनुवादक/राजभाषा, इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड	32-34

संदेश

प्रदीप कुमार दास
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, इरेडा

प्रिय साथियों,

नव वर्ष, विश्व हिंदी दिवस (10 जनवरी) और विश्व महिला दिवस (8 मार्च) की आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं ।

इरेडा की 'ई–पत्रिका –अक्षय क्रांति के इस नवीनतम अंक के साथ आप सभी से संवाद करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है ।

इरेडा भारत देश की एक सबसे बड़ी विशुद्ध ग्रीन फाइनेंसिंग कंपनी है जोकि अक्षय ऊर्जा के लिए जिम्मेदार है, जिसका आदर्श वाक्य "शाश्वत ऊर्जा" तथा "एक बार इरेडा सदैव इरेडा" है। यह अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में जैसे पन बिजली, सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायोमास, सह –उत्पादन, ई–मोबिलिटी, ऊर्जा दक्षता और ऊर्जा संरक्षण से संबंधित विभिन्न परियोजनाओं को बढ़ावा देने और संस्थापित करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है ।

इरेडा अपने कार्यालयी कार्यों में भी राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के लिए यथासंभव प्रयास करती है और गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा समय –समय पर जारी दिशा–निर्देशों और लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सदैव प्रयत्नशील रहती है। इस वर्ष भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम– I), दिल्ली के तत्वावधान में इरेडा द्वारा सभी उपक्रमों के लिए "राजभाषा ज्ञान एवं हिंदी व्याकरण प्रतियोगिता" आयोजित की गई, जिससे अंतर–उपक्रम राजभाषाई प्रगति होती है । इसके सफलतापूर्वक आयोजन के लिए इरेडा को आयोजक पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

इरेडा कार्यालय का मुख्यालय दिल्ली में है और यहाँ भारत के विभिन्न राज्यों से आने वाले कर्मचारीगण जैसे असामी, तेलगु, तमिल, मलयालम, उड़िया, बंगाली, मराठी आदि बहुभाषी हैं फिर भी कार्यालयी कार्य, चर्चा, संवाद आदि एक दूसरे से राजभाषा हिंदी में ही करने का प्रयास करते हैं ।

जिस प्रकार इरेडा अक्षय ऊर्जा के माध्यम से देश के सतत विकास और टिकाऊ विकास करने के लिए लगा हुआ है, मुझे पूरा विश्वास है कि इसी प्रकार राजभाषा हिंदी 'ई –पत्रिका अक्षय क्रांति' के माध्यम से भी राजभाषा हिंदी का चहुंमुखी विकास होगा ।

जय हिंद !

जय हिंदी !

****

वो

संगीता श्रीवास्तव
प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा), इरेडा

शब्दों में ना ढलता जो
वो अबोल, अलबेला है
स्पर्श नहीं कर सकूँ उसे
पर एहसासों में बसता है ।
धरती से लेकर अंबर तक
हर मंजर में वो छुपता है
हर डाली पर हर पुष्प पर
नृत्यांगना सा थिरकता है
पाश नहीं कर पाऊँ उसे
वो हवाओं में बहता है ।
प्रकृति को आलोकित करता पर
शिव बन शून्य–सिमटता वो,
अनंत–अनंत विस्तार उसका पर
मेरे मन मुस्काता वों
आँख – मिचौली खेलें हम
बस जानू मैं या जाने वो ।

****

डिजिटल डिटॉक्सः आधुनिक युग की आवश्यकता

पीयूष अग्रवाल
प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा

आज के तकनीकी युग में, डिजिटल उपकरणों का उपयोग हमारी दिनचर्या का अभिन्न हिस्सा बन गया है। स्मार्टफोन, लैपटॉप, सोशल मीडिया, और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म ने न केवल हमारे कामकाज को आसान बनाया है, बल्कि हमारे जीवनशैली पर गहरा प्रभाव भी डाला है। हालांकि, अत्यधिक डिजिटल उपकरणों का उपयोग हमारे मानसिक, शारीरिक और सामाजिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। ऐसी स्थिति में "डिजिटल डिटॉक्स" का महत्व बढ़ जाता है। डिजिटल डिटॉक्स का मतलब है कुछ समय के लिए सभी प्रकार के डिजिटल उपकरणों और इंटरनेट से दूरी बनाना ताकि हम अपनी मानसिक और शारीरिक ऊर्जा को पुनः संगठित कर सकें।

डिजिटल डिटॉक्स का मतलब है डिजिटल उपकरणों से कुछ समय के लिए दूरी बनाना। इसका उद्देश्य डिजिटल उपकरणों के अत्यधिक उपयोग से बचाव और मानसिक शांति प्राप्त करना है। डिजिटल डिटॉक्स केवल इंटरनेट, सोशल मीडिया या वीडियो गेम्स से दूर रहना ही नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा अवसर है जिसमें हम वास्तविक दुनिया से जुड़ते हैं और अपने स्वास्थ्य, रिश्तों और आत्म–विकास पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

डिजिटल उपकरणों के अत्यधिक उपयोग ने आज कई समस्याओं को जन्म दिया है। इनमें से प्रमुख हैं :

- **मानसिक तनाव और चिंताः** सोशल मीडिया और लगातार नोटिफिकेशन हमारे दिमाग को शांत रहने नहीं देते।
- **नींद की कमीः** सोने से पहले स्क्रीन देखने की आदत नींद के चक्र को प्रभावित करती है।
- **रिश्तों में दूरीः** लोग वास्तविक दुनिया में संवाद करने की बजाय डिजिटल माध्यमों पर अधिक समय बिताते हैं।
- **शारीरिक समस्याएंः** लंबे समय तक स्क्रीन के सामने बैठने से आंखों पर दबाव, सिरदर्द और गर्दन दर्द जैसी समस्याएं होती हैं।

डिजिटल डिटॉक्स अपनाने से जीवन में कई सकारात्मक बदलाव आ सकते हैं :

- **मानसिक शांतिः** डिजिटल उपकरणों से दूरी मानसिक तनाव को कम करती है।
- **बेहतर संबंधः** परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताने का अवसर मिलता है।

- **उत्पादकता में वृद्धि**: कम विकर्षण के कारण काम पर बेहतर ध्यान केंद्रित होता है।
- **शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार**: डिजिटल स्क्रीन से दूरी आंखों और शरीर को आराम देती है।

डिजिटल डिटॉक्स करने के लिए कुछ आसान कदम उठाए जा सकते हैं :

- **समय निर्धारित करें**: हर दिन कुछ घंटे डिजिटल उपकरणों से दूर रहें।
- **नो–गैजेट जोन बनाएं**: अपने घर या कार्यक्षेत्र में ऐसे स्थान निर्धारित करें जहां उपकरणों का उपयोग न हो।
- **शौक अपनाएं**: किताब पढ़ना, पेंटिंग करना, या प्रकृति के करीब जाना डिजिटल डिटॉक्स में मदद करता है।
- **सोशल मीडिया ब्रेक**: कुछ समय के लिए सोशल मीडिया से दूरी बनाएं।

डिजिटल डिटॉक्स केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि आज के समय में एक आवश्यकता है। यह हमें मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने में मदद करता है और हमारे जीवन में एक नया संतुलन लाता है। तकनीक के इस युग में, डिजिटल डिटॉक्स अपनाकर हम न केवल अपनी उत्पादकता बढ़ा सकते हैं, बल्कि जीवन को अधिक सुकूनदायक और सार्थक बना सकते हैं।

****

नवीकरणीय ऊर्जा और सतत् विकास की ओर अग्रसर भारत

रोमेश कुमार गुप्ता
प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा

प्रस्तावना

प्रकृति ने हमें अनमोल उपहार दिए हैं, जिनमें ऊर्जा के स्रोत भी शामिल हैं। लेकिन मानवीय लालच और अत्यधिक दोहन ने इन संसाधनों को खतरे में डाल दिया है। आज हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती है – ऊर्जा की बढ़ती मांग और पर्यावरण का संतुलन बनाए रखना। इस चुनौती का समाधान नवीकरणीय ऊर्जा (Renewable Energy) और ऊर्जा संरक्षण (Energy Conservation) में छिपा है।

नवीकरणीय ऊर्जा : भविष्य का आधार

नवीकरणीय ऊर्जा वह ऊर्जा है जो प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त होती है और जिसका भंडार असीमित है। इसमें सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल विद्युत, बायोमास और भूतापीय ऊर्जा शामिल हैं। भारत ने इस दिशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं।

1. **सौर ऊर्जा** : फरवरी 2025 तक, भारत ने 100 गीगावाट सौर ऊर्जा क्षमता स्थापित की है। भादला सोलर पार्क (राजस्थान) और कामुथी सोलर पार्क (तमिलनाडु) विश्व के सबसे बड़े सौर ऊर्जा पार्कों में शामिल हैं ।
2. **पवन ऊर्जा** : भारत में दिसंबर 2024 तक 48.2 गीगावाट पवन ऊर्जा क्षमता स्थापित है, जिसमें तमिलनाडु, गुजरात ओर राजस्थान प्रमुख योगदानकर्ता हैं।
3. **जल विद्युत** : भारत में 46.9 गीगावाट की स्थापित जल विद्युत क्षमता है, जिसमें हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और अरुणाचल प्रदेश प्रमुख हैं।
4. **बायोमास ऊर्जा** : देश में 10.7 गीगावाट बायोमास ऊर्जा क्षमता स्थापित है, जो ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ ऊर्जा का महत्वपूर्ण स्रोत है।

ऊर्जा संरक्षण : हमारी जिम्मेदारी

ऊर्जा संरक्षण का अर्थ है ऊर्जा का सही और कुशलतापूर्वक उपयोग करना । भारत के ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (BEE) के अनुसार, ऊर्जा संरक्षण से देश हर वर्ष लगभग 23,000 करोड़ रुपये की बचत कर सकता है । हमारे छोटे–छोटे प्रयास भी ऊर्जा की बचत में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं । जैसे :

- एलईडी बल्बों का उपयोग करने से 80 % तक ऊर्जा की बचत हो सकती है ।
- 5–स्टार रेटेड उपकरण 25–40 % कम बिजली का उपयोग करते हैं ।

- सौर ऊर्जा से चलने वाले उपकरणों को अपनाना ।
- बिजली के उपकरणों को बंद करके रखना जब उनका उपयोग न हो ।
- जल संरक्षण के साथ – साथ ऊर्जा संरक्षण पर भी ध्यान देना ।

कविता : ऊर्जा का संदेश

सूरज की सुनहरी किरणें, धरती पर जब आती हैं,
प्रकृति के इस वरदान से, नई उमंगें छाती हैं ।
पवन की लहरों में छिपी, अनंत शक्ति का भंडार,
इसी से मिलता है हमें, ऊर्जा का नया संसार ।
बूंद–बूंद से भरते हैं, नदियों के विशाल सागर,
जल से मिलती विद्युत है, होता जीवन उजागर ।
काला सोना खतम होगा, यह बात हे निश्चित अब,
हरित ऊर्जा अपनाएं हम, बचाएं धरती को सब ।
सौर पैनल छत पर लगाएं, बिजली घर में लाएं,
एलईडी बल्ब का करें उपयोग, ऊर्जा हम बचाएं।
नवीकरणीय ऊर्जा के पथ पर, बढ़ रहा है भारत लगातार,
सतत विकास के सपने को, मिलकर करेंगे हम साकार।

सतत विकास : एक जरूरत

सतत विकास (Sustainable Development) का अर्थ है वर्तमान की जरूरतों को पूरा करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधनों को सुरक्षित रखना। नवीकरणीय ऊर्जा और ऊर्जा संरक्षण सतत विकास के मुख्य स्तंभ हैं । भारत ने इस दिशा में कई पहल की हैं, जैसे :

1. राष्ट्रीय सौर मिशन : 2030 तक 280 गीगावाट सौर ऊर्जा उत्पादन का संशोधित लक्ष्य।
2. हरित हाइड्रोजन मिशन : 2030 तक 5 मिलियन मीट्रिक टन हरित हाइड्रोजन उत्पादन का लक्ष्य।
3. पंचामृत योजना : 2070 तक "नेट जीरो" कार्बन उत्सर्जन प्राप्त करने का लक्ष्य।
4. कुसुम योजना : किसानों को सौर ऊर्जा से सिंचाई के लिए 34,400 करोड़ रुपए की सहायता।

भारत की उपलब्धियां और चुनौतियां

उपलब्धियां

1. कुल स्थापित नवीकरणीय क्षमता : अक्टूबर 2024 तक, भारत ने 203 गीगावाट से अधिक नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता स्थापित की है, जो कुल स्थापित क्षमता का लगभग 46 % है ।
2. अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन : भारत के नेतृत्व में स्थापित यह गठबंधन अब 120 देशों का संगठन बन चुका है और सौर ऊर्जा प्रोद्योगिकी के विकास में अग्रणी है ।

3. अक्षय ऊर्जा में निवेश : वित्तीय वर्ष 2023–24 में, भारत में नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में 14.5 अरब डॉलर का निवेश हुआ, जो पिछले वर्ष से 26 % अधिक है ।
4. लागत की कमी : भारत में सौर ऊर्जा की लागत 2.15 रुपए प्रति यूनिट तक पहुंच गई है, जो कोयला आधारित बिजली से भी सस्ती है।

चुनौतियां

1. वित्तीय बाधाएं : नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के लिए प्रारंभिक निवेश अधिक होता है, भारत को 2030 तक अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए लगभग 223 अरब डॉलर के निवेश की आवश्यकता है।
2. तकनीकी सीमाएं : ऊर्जा भंडारण की चुनौतियां मौजूद हैं, भारत में अभी केवल 4.7 गीगावाट की ऊर्जा भंडारण क्षमता है।
3. ग्रिड इंटीग्रेशन : नवीकरणीय ऊर्जा के अनियमित उत्पादन को राष्ट्रीय ग्रिड में एकीकृत करना एक प्रमुख चुनौती है।

कविता : प्रकृति का आह्वान

धरती माता पुकारती है, सुनो मनुज मेरे प्यारे,
खजाने मेरे सीमित हैं, समझो बच्चे दुलारे ।
जीवाश्म ईंधन का अंधाधुंध दोहन, जब करते जाओगे,
प्रदूषण से भरी हवा में, कैसे तुम सांस ले पाओगे ?
सूरज की किरणें अनमोल हैं, इनको करलो स्वीकार,
पवन, जल की शक्ति अपनाओं, बनाओं जीवन का आधार ।
नवीकरणीय ऊर्जा के मार्ग पर, कदम बढ़ाओं नित नए,
भविष्य के लिए आज बचाओ, संसाधन सारे खरे खरे।
हर घर में सौर ऊर्जा हो, हर गांव में पवन चक्की,
स्वच्छ ऊर्जा से विकास करो, जीवन होगा तब सुखी ।
आने वाली पीढ़ी के लिए सतत विकास का मार्ग अपनाओं,
अपने और सबके हित में, धरती को तुम स्वर्ग बनाओं ।

भविष्य की दिशा

भारत की महत्वाकांक्षी योजना है कि 2030 तक देश की 50 % ऊर्जा जरूरतें नवीकरणीय स्रोतों से पूरी हों और 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता स्थापित की जाए। इसके लिए सरकार, निजी क्षेत्र और नागरिकों को मिलकर काम करना होगा। इस दिशा में कुछ सुझाव :

1. शोध और विकास : सरकार ने ऊर्जा भंडारण और हरित हाइड्रोजन प्रौद्योगिकी में 19744 करोड़ रुपए के निवेश की घोषणा की है।

2. प्रोत्साहन और सब्सिडी : सोलर रूफटॉप परियोजनाओं के लिए 40 % तक सब्सिडी और हरित ऊर्जा उपकरणों पर जीएसटी में 5 % तक की छूट ।

3. जन–जागरूकता : 'गो ग्रीन' अभियान के तहत 1,000 से अधिक स्कूलों में नवीकरणीय ऊर्जा प्रयोगशालाएं स्थापित की गई हैं ।

4. ग्रामीण विद्युतीकरण : 'सौभाग्य योजना' के माध्यम से 99.9 % गांवों में बिजली पहुंचा दी गई है, जिसमें से कई मिनी–ग्रिड और सौर ऊर्जा का उपयोग किया गया है ।

निष्कर्ष

नवीकरणीय ऊर्जा और ऊर्जा संरक्षण न केवल पर्यावरण को बचाने का माध्यम है, बल्कि यह आर्थिक रूप से भी लाभदायक हे । भारत में हरित ऊर्जा क्षेत्र में हर वर्ष लगभग 50,000 नौकरियां पैदा हो रही हैं और 2030 तक 34 लाख नए रोजगार सृजित होने का अनुमान है।

भारत अपनी प्राचीन परंपराओं में प्रकृति के साथ सामंजस्य से रहने की शिक्षा देता रहा है । वेदों में 'प्रकृति पूजन' का संदेश आज नवीकरणीय ऊर्जा और सतत विकास के रूप में हमारे समक्ष है। इस पथ पर चलकर हम न केवल अपने देश बल्कि पूरे विश्व को एक स्वच्छ, हरित और सुरक्षित भविष्य दे सकते हैं ।

प्रकृति और विकास के बीच सामंजस्य स्थापित करके ही हम आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ पृथ्वी छोड सकते हैं। नवीकरणीय ऊर्जा का संकल्प लें, सतत विकास का मार्ग अपनाएं, और भारत को विश्व का हरित ऊर्जा नेता बनाने में अपना योगदान दें ।

****

अनेकता में एकता

गुंजन महानी
उप प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा

ये हिंदुस्तान हमारा देश और हमारी मातृ भूमि है। हमारा देश अतियंत सुन्दर है। इसके तीनो और समुंदर है। उत्तर में बर्फ से ढाका हिमालय है। मध्य अमी हरी–भरी लहलहाते फसल की भूमि है। देश में गंगा, यमुना, नर्मदा, गोदावरी, कावेरी जैसी कितनी सुंदर नदियां बहती हैं। देश के खेतों की हरियाली देख के भी मन नहीं भरता, तभी तो विश्वकवि रवींद्र ने इस देश के लिए "भुवन–मन–मोहिनी" कहा है। अपनी सुन्दरता से इस देश ने सारे संसार का मन मोह लिया है।

संसार में ऐसा देश बहुत कम है। क्या देश की धरती सोना देती है। ऐसी कोई फसल नहीं जो इस धरती पर न उगती हो। ऐसा कोई खनिज नहीं जो देश के भू–गर्भ में न मिलता हो। लोहा, सोना, तांबा, मैग्नीशियम, कोयला पेट्रोलियम, आदि सभी मिलते हैं। देश के घने वनों में कीमती लकड़ियां और विविध प्रकार के पशु पक्षी पाए जाते हैं। देश की बड़ी–बड़ी नदियाँ से हमने एक औरतों की खेती के लिए पानी मिलता है और दूसरा और उनसे बिजली भी पैदा होती है। हमारे देश का इतिहास बहुत पुराना है देश में हजारों वर्ष पुरानी सभ्यता के निशानी विद्यामान हैं। जमीन की खुदाई से युग के अनेक चिन्ह पाये जाते हैं।

मुगल युग के चिन्ह तो देश के सभी स्थानों में फेले हुए हैं। देश की राजधानी दिल्ली तो विशाल मुगल साम्राज्य की स्मृति चिन्ह से परिपूर्ण है। आगरा का ताजमहल, फतेहपुर सीकरी, अजंता एलोरा की शिल्पकला, कोणार्क और मदुरै के मंदिर सभी भारत के गौरव पूर्ण अतीत की झाँकी प्रस्तुत करते हैं। इतने अधिक प्राचीन स्मृति चिन्ह मंदिर मस्जिद और समाधि भवनों से भरा देश संसार में और कहीं भी नहीं है।

प्राचीन काल में संसार में कुछ ही देश शिक्षा और विज्ञान में काफी उन्नति थी। हमारा देश भी उन लोगों से एक है। प्राचीन हिंदुस्तान के शिक्षा केंद्रों में विश्व के विभिन्न भागों से विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने आते थे। नालंदा के खंड घर आज भी प्रसिद्ध शिक्षा केंद्र होने की गवाही देते हैं।

हमारे देश का अतीत गौरव पूर्ण था। भारत के उस काल के वैज्ञानिक जहाज निर्माण कला में माहिर थे। अपने जहाजों से वे देश विदेश में व्यापार के लिए जाते थे। कितने ही लोग धर्म प्रचार के लिए भी गए। उनको हमारे वहां धर्म आचार विचार और दर्शन को फैलाया।

हिंदुस्तान का अनोखा पान इसके निवासियों में भी पाया जाता है। देश के विविध स्थानों में विविध प्रकार के लोग रहते हैं। कोई गोरा है तो कोई काला, कोई लम्बा है तो कोई नाटा। वेशभूषा भी अलग अलग होती है।

सामाजिक रीति रिवाज और भाषा भी भिन्न है। यहां हिंदू, मुसलमान, पारसी, इसाई, जैन, सिख, सभी धर्मों के लोग निवास करते हैं। कोई मंदिर में जाता है तो कोई मस्जिद में तो कोई गुरुद्वारे में तो कोई गिरजे में। चाहे कोई भी कहीं क्यों ना जाता हो पर सभी एक ही भगवान की आराधना करते हैं। दैनिक रहन सहन में भी देश के विभिन्न स्थानों के निवासियों में काफी विचित्रता पाई जाती है।

इतना विशाल और इतनी विचित्रताएं होने के कारण हिंदुस्तान को एक उपमहाद्वीप कहा गया है। बाहर से देखने पर बहुत अनेकता दिखती है लेकिन इसके भीतर सर्वत्र एकता का बंधन जुड़ गया है। विचित्रताओं के बीच एकता की भावना विद्यामान है। बाहर से देखें पर कोई बंगाली कोई पंजाबी या कोई बिहारी नजर आता है परंतु वास्तव में यह सभी एक हैं। सब हिंदुस्तानी हैं देश के विशाल जन समुदाय का एकमात्र अंश हैं। इनका अतीत एक है, संस्कृति और सभ्यता भी एक है। ये सभी हिंदुस्तानी हैं, एक ही ऐश्वर्या के अधिकारी हैं, एक ही सुख–दुख के भागी हैं।

भिन्न युगों में भिन्न भिन्न देशों से लोग आ कर इस देश में बस गए। दूर के और पराए लोग सभी अपने बन गए। वे अपनी विशिष्टता को खोकर हिंदुस्तानी के रूप में ही जाने जाते हैं। विविध धर्मों का मिलन तीर्थ ये हिंदुस्तान हमारा देश है। और हमारी जन्म भूमि है। विविधता में एकता, अनेकता में एकता ही देश की सबसे बड़ी चीज है।

"भारत माता की जय"

****

योग

रिजवान अतहर
उप प्रबंधक (सचि.), इरेडा

योग, एक प्राचीन अभ्यास है, जिसकी उत्पत्ति सिंधु घाटी में 5,000 साल से अधिक पुरानी है। यह आत्म–देखभाल और व्यायाम की दुनिया के सबसे पुराने रूपों में से एक है, जो विश्व स्तर पर लाखों अभ्यासकर्ताओं को आकर्षित करता है। योग की उत्पत्ति भारत में हुई और यह एक प्राचीन अभ्यास है जो योगियों द्वारा किया जाता था। योग शब्द संस्कृत शब्द युज से आया है, जिसका अर्थ है "जोड़ना"।

21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाता है जहाँ लोगों को योग के लाभों के बारे में जागरूक किया जाता है। योग मानव जाति के लिए एक महान उपहार है जो हमें बेहतर रहने और अपने स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करता है। जब आप योग का अभ्यास करते हैं तो आपके अंदर धैर्य का स्तर भी बढ़ता है जो नकारात्मक विचारों को दूर रखने में भी मदद करता है। आपको बड़ी मानसिक स्पष्टता और बेहतर समझ मिलती है।

योग एक समग्र अभ्यास है जो शारीरिक और मानसिक दोनों तरह के कल्याण के लिए कई लाभ प्रदान करता है। इसके प्राथमिक लाभों में से एक लचीलापन और संतुलन बढ़ाना है। आसन और स्ट्रेच की एक श्रृंखला के माध्यम से, योग व्यक्तियों को उनकी गति की सीमा में सुधार करने और चोटों के जोखिम को कम करने में मदद करता है।

योग करने के सामान्य लाभ :

- लचीलेपन में सुधार होता है
- तनाव कम होता है
- शरीर की ताकत बढ़ती है
- चिंता को कम करता है
- बीमारी के दौरान जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है
- आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली को लाभ होता है
- नींद में सुधार होता है

अगर हम योग के लाभों को और ज्यादा बारीकी से देखें तो इनको विभिन्न प्रकारों में बांटा जा सकता है :

शारीरिक लाभ :

1. उन्नत लचीलापनः योग लचीलापन बढ़ाता है, जिससे चोट लगने का खतरा कम होता है।
2. बेहतर ताकतः यह कार्यात्मक ताकत और मुद्रा को बढ़ावा देता है।
3. बेहतर संतुलनः योग समन्वय और स्थिरता को बढ़ाता है, खासकर वृद्ध वयस्कों में।
4. दर्द से राहतः यह पीठ दर्द और गठिया जैसी पुरानी दर्द स्थितियों को कम करता है।

मानसिक लाभ :

1. तनाव में कमीः योग तनाव को कम करता है और विश्राम को बढ़ावा देता है।
2. मानसिक स्पष्टताः यह फोकस और संज्ञानात्मक कार्य को तेज करता है।
3. भावनात्मक संतुलनः योग भावनात्मक जागरूकता और प्रबंधन को बढ़ावा देता है।
4. बेहतर नींदः यह आराम और बेहतर नींद में सहायता करता है।

आध्यात्मिक लाभ :

1. आत्म–खोजः योग आत्म–समझ और व्यक्तिगत विकास को प्रोत्साहित करता है।
2. संबंधः कुछ लोग योग के माध्यम से आध्यात्मिक संबंध पाते हैं।

सामान्य कल्याण :

1. वजन प्रबंधनः योग वजन घटाने और संतुलित जीवन जीने में सहायता करता है।
2. पाचन स्वास्थ्यः यह पाचन और गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल स्वास्थ्य में सुधार करता है।
3. इम्यून सिस्टम बूस्टः योग इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाता है।
4. दीर्घायुः चिकित्सकों का कहना है कि इससे जीवन शक्ति में वृद्धि होती है और जीवन लंबा होता है।

अगर ध्यान से देखा जाए तो योग के अनगिनत फायदे हैं। इसका नियमित अभ्यास करने पर आपको राहत मिलेगी। क्योंकि यह हमारे दिमाग और शरीर से बीमारियों को दूर रखता है। इसके अलावा, जब हम कई आसन और मुद्राओं का अभ्यास करते हैं, तो यह हमारे शरीर को मजबूत बनाता है और हमें स्वस्थता और स्वस्थता का एहसास कराता है।

इसके अलावा, योग हमारे दिमाग को तेज करने और हमारी बुद्धि को बेहतर बनाने में मदद करता है। हम योग के माध्यम से उच्च स्तर की एकाग्रता प्राप्त कर सकते हैं और यह भी सीख सकते हैं कि अपनी भावनाओं को कैसे स्थिर रखा जाए। यह हमें पहले की तरह प्रकृति से जोड़ता है और हमारे सामाजिक कल्याण को बढ़ाता है।

इसके अलावा, यदि नियमित रूप से अभ्यास किया जाए तो आप योग से आत्म–अनुशासन और आत्म–जागरूकता विकसित कर सकते हैं। इसे लगातार करने पर आपको शक्ति का एहसास होगा और आपको किसी भी समस्या से मुक्त स्वस्थ जीवन जीने में मदद मिलेगी। योग का अभ्यास कोई भी कर सकता है, चाहे आपकी उम्र कुछ भी हो या आप किसी भी धर्म को मानते हों।

संक्षेप में कहें तो योग के कई फायदे हैं। अपने स्वास्थ्य को दुरुस्त रखने के लिए और इससे लाभ उठाने के लिए हर किसी को इसका अभ्यास करना चाहिए। दवाओं या किसी भी प्रकार के अन्य शॉर्टकट जैसे कृत्रिम साधनों के उपयोग के बिना स्वस्थ और लंबा जीवन जीने का यही रहस्य है।

हमारे जीवन मे कुछ प्रमुख बीमारियों को ठीक करने के लिए निम्नलिखित योग करना चाहिएः

उच्च रक्तचाप के लिए सर्वोत्तम योग :

- सेतु बंधासन (ब्रिज पोज)
- सवासना (शव मुद्रा)
- उत्तानासन (आगे की ओर झुककर खड़े होना)
- मार्जरीआसन / बिटिलासन (बिल्ली–गाय मुद्रा)
- बालासन (बाल मुद्रा)
- अधो मुख संवासन (नीचे की ओर मुख वाला कुत्ता)

मधुमेह के लिए सर्वोत्तम योग आसन :

1. सूर्य नमस्कार
2. धनुरासन (धनुष मुद्रा) योग मुद्रा अग्न्याशय को विनियमित करने और उन्हें मजबूत करने में मदद करती है, जो बदले में रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने के लिए इंसुलिन संवेदनशीलता को नियंत्रित करती है।
3. ताड़ासन (पर्वत मुद्रा) ताड़ासन मधुमेह वाले लोगों के लिए एक सरल योग मुद्रा है।
4. बालासन (बाल मुद्रा)

****

मेरी प्यारी दिल्ली

आलर कुल्लू
उप प्रबंधक (राजभाषा), इरेडा

दिल्ली, आधिकारिक तौर पर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली भारत की राजधानी और एक केंद्र शासित प्रदेश है। यही नई दिल्ली है जो भारत की राजधानी है। दिल्ली भारत की राजधानी होने के नाते केंद्र सरकार की तीनों इकाइयों–कार्यपालिका, संसद और न्यायपालिका के मुख्यालय नई दिल्ली और दिल्ली में स्थापित हैं और यहीं पर राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्य न्यायधीश और प्रायः सभी सरकारी कार्यालयों के मुख्यालय मौजूद हैं साथ में इरेडा कार्यालय का पंजीकृत, व्यवसाय केंद्र और कॉर्पोरेट कार्यालय भी हैं। दिल्ली जनसंख्या के तौर पर भारत का दूसरा सबसे बड़ा महानगर है। यहाँ बोली जाने वाली भाषा को खिचड़ी भाषा भी कहा जा सकता है। यहाँ की मुख्य भाषाएँ हैं: हिन्दी, पंजाबी, उर्दू और अंग्रेजी आदि है।

यमुना नदी के किनारे स्थित इस नगर का गौरवशाली पौराणिक इतिहास है, और पुराणों में इसका विशेष महत्व है। यह भारत का अति प्राचीन नगर है। मुगल बादशाहों ने लाल किला, जमा मस्जिद, कुतुब मीनार आदि कई ऐतिहासिक इमारतों का निर्माण किया जोकि आज भी सैकड़ों साल से मुगलकालीन शासन की गाथा सुना रहे हैं। आधुनिक दिल्ली का निर्माण ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन काल से प्रारंभ होता है जिन्होंने भारत की राजधानी नई दिल्ली को बनाया। अंग्रेजों ने ही राष्ट्रपति भवन, संसद भवन, जनपथ और कई इमारतों का निर्माण किया जोकि आज भी अंग्रेजी राज काज और योगदान की गाथा सुना रहे हैं। शहर के बड़े हिस्सों को ब्रिटिश आर्किटेक्ट्स सर एडविन लुटियंस और सर हर्बर्ट बेकर द्वारा ही डिजाइन किया गया था।

दिल्ली वास्तव में लोगों के दिल में दिल्ली वसती है, यहाँ के गली–कूचे, यहाँ के खान–पान, यहाँ की सभ्यता – संस्कृति, रहन–सहन, वेशभूषा और यहाँ की मिट्टी और आबो–हवा को कोई भी व्यक्ति छोड़ना नहीं चाहता है। अंग्रेज भी इस शहर को छोड़ना नहीं चाहते थे ।

शेख इब्रहीम जौक के शब्दों में

" इन दिनों गरचे दकन में है बड़ी कद्र–ए–सुख़न।

कौन जाए 'जौक' पर दिल्ली की गलियाँ छोड़ कर ॥"

नई दिल्ली भारत देश की राजधानी के नाते प्रायः सभी सरकारी कार्यालयों का मुख्यालय है। दिल्ली, आधिकारिक तौर पर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली भारत की राजधानी और एक केंद्र शासित प्रदेश है जिसके कारण जीविका और रोजगार के अवसर उपलब्ध है। इस देश के 28 राज्यों और 8 केंद्र शासित

प्रदेशों में रहने वाले नागरिक हर रोज कई रेलगाड़ियों, हवाई जहाजों, मोटर कारों से दिल्ली और दिल्ली के आस–पास के शहरों जैसे नोएडा, गुरुग्राम आदि में या तो रोजगार की तलाश में या भ्रमण या सरकारी काम के लिए हजारों लोग आते हैं और अपनी–अपनी किस्मत की आज़माइश करते हैं। इसमें कुछ लोग यहीं के होकर रह जाते हैं, कुछ लोग वापस अपनी पैतृक जगह लौट जाते हैं।

ऐसे भी दिल्ली को दिल वालों का शहर कहा जाता है। मगर कुछ दशकों से आधुनिक विकास और कंक्रीट के बढ़ते जंगल से दिल्ली की जलवायु, पर्यावरण, पानी की समस्या और वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण में जबरदस्त बढ़ोतरी हुई है। इन दिनों वायु गुणवत्ता सूचकांक खराब और बहुत खराब की स्थिति में पहुँच रहा है, स्वांस लेना दुश्वार हो गया है, पानी की भी यही स्थिति है, स्वच्छ पीने का पानी उपलब्ध बड़ी मुश्किल से हो रहा है। हमें दिल्ली में रोटी और कपड़ा तो मिल रहा है किन्तु मकान का जुगाड़ करना टेढ़ी खीर हो रहा है। दिल्ली की गंदी नालियों के पानी से यमुना नदी जो दिल्ली की जीवन रेखा नदी कहलाती है, काली हो गई है, दिल्ली वासियों के पाप धोते धोते और काली – मैली और अधिक प्रदूषित होते जा रही है।

इस सुंदर दिल्ली को, दिल वालों की दिल्ली को, भारत की पहचान देने वाली दिल्ली को और भारत देश की राजधानी दिल्ली को आने वाली पीढ़ी से लिए संरक्षित रखना है। हमें दिल्ली की जनसंख्या के बोझ को कम करना है। दूसरी उप राजधानी बनाना है। अधिक से अधिक पेड़–पौधे लगाकर वायु प्रदूषण को कम करना है। पानी और ध्वनि प्रदूषण कम करना है और हरित ऊर्जा अपनाना है।

"अक्षय ऊर्जा से दिल्ली का विकास ! सौर ऊर्जा के दिल्ली का हर घर प्रकाश! इलेक्ट्रिक वाहन से दिल्ली के सड़क गुलजार ! पवन और पन बिजली से दिल्ली का विकास ! अक्षय ऊर्जा अपनाएं, हरित ऊर्जा अपनाएं और मिल–जुलकर दिल्ली का सतत विकास करें।"

****

अक्षय ऊर्जा: हमारी जिम्मेदारी

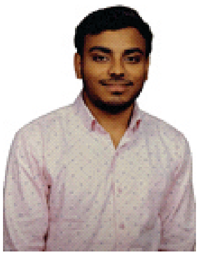

गौरव वार्ष्णेय
उप प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा

आज के युग में, जब पर्यावरणीय असंतुलन और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दे मानवता के लिए गंभीर चुनौती बन गए हैं, अक्षय ऊर्जा का महत्व और आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। यह केवल ऊर्जा का एक स्रोत नहीं है, बल्कि भविष्य को सुरक्षित रखने का एक स्थायी समाधान है। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल ऊर्जा और जैव ऊर्जा जैसे अक्षय स्रोत पर्यावरण को हानि पहुँचाए बिना हमारी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हैं। इन संसाधनों का उपयोग करना न केवल हमारी आवश्यकता है, बल्कि यह हमारी सामाजिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारी भी है।

अक्षय ऊर्जा : एक समाधान

पारंपरिक ऊर्जा स्रोत, जैसे कोयला, तेल और गैस, सीमित हैं और उनके उपयोग से पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वायु और जल प्रदूषण, ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन और पारिस्थितिकी तंत्र पर हानिकारक प्रभाव इन स्रोतों के दुष्परिणाम हैं। दूसरी ओर, अक्षय ऊर्जा स्रोत असीमित और स्वच्छ हैं। ये ऊर्जा स्रोत न केवल प्रदूषण को कम करते हैं, बल्कि जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को भी नियंत्रित करने में सहायक हैं।

भारत में अक्षय ऊर्जा की स्थिति

भारत अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में दुनिया के अग्रणी देशों में शामिल है। सरकार ने 2030 तक 500 गीगावाट अक्षय ऊर्जा उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित किया है। सौर ऊर्जा में भारत ने उल्लेखनीय प्रगति की है। राजस्थान का भादला सोलर पार्क और गुजरात का कच्छ पवन ऊर्जा संयंत्र इसके उदाहरण हैं। इसके साथ ही, अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) जैसी पहल भारत की वैश्विक नेतृत्व क्षमता को दर्शाती है।

हमारी जिम्मेदारी

अक्षय ऊर्जा को बढ़ावा देना न केवल सरकार का काम है, बल्कि प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। व्यक्तिगत स्तर पर छोटे–छोटे कदम बड़े बदलाव ला सकते हैं:

1. **सौर ऊर्जा का उपयोग:** अपने घरों में सोलर पैनल लगाकर ऊर्जा की खपत को अक्षय स्रोतों से पूरा करना।
2. **ऊर्जा बचत:** बिजली उपकरणों का विवेकपूर्ण उपयोग और ऊर्जा दक्षता पर ध्यान देना।
3. **स्थानीय परियोजनाओं में भागीदारी:** अक्षय ऊर्जा को प्रोत्साहित करने वाली परियोजनाओं का समर्थन करना।

4. **जनजागरूकता:** अपने समुदाय और समाज में अक्षय ऊर्जा के महत्व को समझाना।

अक्षय ऊर्जा का महत्व

अक्षय ऊर्जा केवल पर्यावरण संरक्षण का माध्यम नहीं है, यह समाज और आर्थिक विकास के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। ग्रामीण क्षेत्रों में अक्षय ऊर्जा परियोजनाएँ स्थानीय रोजगार के अवसर उत्पन्न करती हैं। इसके अलावा, यह ऊर्जा सुरक्षा को सुनिश्चित करती है और देश को आत्मनिर्भर बनाती है।

निष्कर्ष

अक्षय ऊर्जा को अपनाना हमारी जिम्मेदारी है। यह केवल तकनीकी समाधान नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति हमारी प्रतिबद्धता और भावी पीढ़ियों के प्रति हमारी जवाबदेही है। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों को कम करने और ऊर्जा संसाधनों का सतत् उपयोग सुनिश्चित करने के लिए हमें अक्षय ऊर्जा को अपने जीवन का हिस्सा बनाना होगा।

आइए, हम सभी अक्षय ऊर्जा के इस आंदोलन का हिस्सा बनें और स्वच्छ, हरित और स्थायी भविष्य की ओर कदम बढ़ाएँ। यह न केवल पर्यावरण के लिए आवश्यक है, बल्कि हमारी नैतिक जिम्मेदारी भी है।

****

प्रदूषण

हजारी लाल
प्रोटोकॉल अधिकारी, इरेडा

प्रदूषण का अर्थः— संतुलित वातावरण में ही जीवन का विकास संभव है। पर्यावरण का निर्माण प्रकृति के द्वारा किया गया है। प्रकृति द्वारा प्रदत्त पर्यावरण जीवधारियों के अनुकूल होता है। जब वातावरण में कुछ हानिकारक घटक आ जाते हैं तो वे वातावरण का संतुलन बिगाड़ कर उसको दूषित कर देते हैं। यह गंदा वातावरण जीवधारियों के लिए अनेक प्रकार से हानिकारक होता है। इस प्रकार "वातावरण के दूषित हो जाने" को ही प्रदूषण कहते हैं।

जनसंख्या की असाधारण वृद्धि और औद्योगिक प्रगति में प्रदूषण की समस्या को जन्म दिया है और आज इसने इतना विकराल रूप धारण कर लिया है कि उससे मानवता के विनाश का संकट उत्पन्न हो गया है।

प्रदूषण के प्रकारः—आज के वातावरण में प्रदूषण निम्नलिखित रूपों में दिखाई देता हैः—

(क) **वायु प्रदूषणः**— वायु जीवन का अनिवार्य स्रोत है। प्रत्येक प्राणी को स्वस्थ रुप से जीने के लिए शुद्ध वायु अर्थात् ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है। जिस कारण वायुमंडल में इसकी विशेष अनुपात में उपस्थिति आवश्यक है। जीवधारी साँस द्वारा ऑक्सीजन ग्रहण करता है और कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ता है। पेड़ पौधे कार्बन डाइऑक्साइड ग्रहण कर हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। इससे वायुमंडल में शुद्धता बनी रहती है। आजकल वायुमंडल में ऑक्सीजन गैस का संतुलन बिगड़ गया है और वायु अनेक हानिकारक गैसों से प्रदूषित हो गई है ।

(ख) **जल प्रदूषण :** जल को जीवन कहा जाता है और यह भी माना जाता है कि जल में ही सभी देवता निवास करते हैं। इसके बिना जीव—जन्तु और पेड़—पौधों का भी अस्तित्व नहीं है। फिर भी बड़े—बड़े नगरों के गन्दे नाले और सीवर नदियों के जल में आकर मिला दिये जाते हैं। कारखानों का सारा मैला बहकर नदियों के जल में आकर मिलता है। इससे जल प्रदूषित हो गया है और उससे भयानक बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं जिससे लोगों का जीवन ही खतरे में पड़ गया है।

(ग) **ध्वनि प्रदुषण :** ध्वनि प्रदूषण भी आज की नयी समस्या है। इसे वैज्ञानिक प्रगति ने पैदा किया है। मोटर,कार,ट्रैक्टर,जेट विमान, कारखानों के सायरन, मशीनें तथा लाउडस्पीकर ध्वनि के सन्तुलन को बिगाड़कर ध्वनि—प्रदूषण उत्पन्न करते हैं। अत्यधिक ध्वनि—प्रदुषण से मानसिक विकृति तीव्र क्रोध/अनिद्रा एवं चिड़चिड़ापन जैसी मानसिक समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं।

(घ) **रेडियोधर्मी प्रदुषण :** आज के .युग में वैज्ञानिक परीक्षणों का जोर है। परमाणु परीक्षण निरन्तर होते ही रहते हैं। इसके विस्फोट से रेडियोधर्मी पदार्थ सम्पूर्ण वायुमण्डल फैल जाते हैं और अनेक प्रकार से जीवन को क्षति पहुँचाते हैं।

(ङ) **रासायनिक प्रदुषण :** कारखानों से बहते हुए अपशिष्ट द्रव्यों के अलावा रोगनाशक तथा कीटनाशक दवाइयों से और रासायनिक खादों से भी स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ये पदार्थ पानी के साथ बहकर जीवन को अनेक प्रकार से हानि पहुँचाते हैं।

प्रदूषण की समस्या तथा इससे हानियाँ : बढ़ती हुई जनसंख्या और औद्योगीकरण ने विश्व के सम्मुख प्रदूषण की समस्या पैदा कर दी है। कारखानों के धुएँ से विषैले कचरे के बहाव से तथा जहरीली गैसों के रिसाव से आज मानव–जीवन समस्याग्रस्त हो गया है। इस प्रदूषण से मनुष्य जानलेवा बीमारियों का शिकार हो रहा है। कोई अपंग होता है तो कोई बहरा/किसी की दृष्टि शक्ति नष्ट हो जाती है तो किसी का जीवन। विविध प्रकार की शारीरिक विकृतियाँ मानसिक कमजोरी, असाध्य कैंसर व ज्वर इन सभी रोगों का मूल कारण विषैला वातावरण ही है।

समस्या का समाधान : वातावरण को प्रदूषित होने से बचाने के लिए वृक्षारोपण सर्वश्रेष्ठ साधन है। दूसरी ओर वृक्षों के अधिक कटाव पर भी रोक लगायी जानी चाहिए। कारखाने और मशीनें लगाने की अनुमति उन्हीं लोगों को दी जानी चाहिए जो औद्योगिक कचरे और मशीनों के धुएँ को बाहर निकालने की समुचित व्यवस्था कर सकें। संयुक्त राष्ट्र संघ को चाहिए कि वह परमाणु परीक्षणों को नियन्त्रित करने की दिशा में उचित कदम उठाए। तेज ध्वनि वाले वाहनों पर साइलेंसर आवश्यक रूप से लगाए जाने चाहिए तथा सार्वजनिक रूप से लाउडस्पीकरों आदि के प्रयोग को नियन्त्रित किया जाना चाहिए। जल–प्रदूषण को नियन्त्रित करने के लिए औद्योगिक संस्थानों में ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए कि व्यर्थ पदार्थों एवं जल को उपचारित करके ही बाहर निकाला जाए तथा इनको जल स्रोतों में मिलाने से रोका जाना चाहिए।

****

असली स्वच्छता है– मन की स्वच्छता

चन्द्रकला मिश्र
अपर महाप्रबंधक (मा. सं.–राजभाषा)
बीएचईएल कॉर्पोरेट कार्यालय

नहाए धोए क्या भया जो मन मैल न जाय,
मीन सदा जल में रहे धोए बास न जाय।

(मछली सदैव जल में रहती है, फिर भी उसके शरीर की दुर्गंध नहीं जाती, उसी प्रकार मनुष्य नहा–धोकर शरीर को कितना भी साफ कर ले, वह स्वच्छ तभी होगा जब उसका मन साफ होगा)

– **संत कबीरदास**

कहा जाता है कि जहां स्वच्छता होती है, वहां ईश्वर का वास होता है। स्वच्छता मानव जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। यह उतना ही जरूरी है, जितना कि दान–पुण्य। इसीलिए, हर त्यौहार पर घर की सफाई का बहुत बड़ा महत्व है।

स्वच्छता की शुरूआत स्वयं से होती है। यही मानवीय सभ्यता का प्रथम चरण है। मैले–कुचौले शरीर और गंदे वस्त्र धारण करने वाले व्यक्ति को कोई पसंद नहीं करता है। वह सर्वत्र उपेक्षित होता है, उसका मजाक बनाया जाता है और उसे असभ्य कहा जाता है। गंदगी आलस्य का लक्षण है। जागरूक और अपनी गरिमा का ध्यान रखने वाले व्यक्ति की पहली कोशिश होती है कि वह गंदगी से नाता तोड़कर स्वच्छता अपनाए। स्वच्छता सुंदर लगती है और व्यक्ति को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करती है।

स्वच्छता का तात्पर्य शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक सभी प्रकार की स्वच्छता से है। इसके बाहरी और आंतरिक पक्ष एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। आंतरिक पक्ष से तात्पर्य है – मानसिक मलिनता, जो स्वार्थ और बुरी प्रवृत्तियों को जन्म देती है। लालच, मोह और अंहकार से व्यक्ति के मन में बुरे विचार उत्पन्न होते हैं। यही बुरे विचार उसे उद्विग्न करते रहते हैं और दुष्कर्मों को बढ़ावा देते हैं। अतः हमें अपने बाहरी स्वरूप अर्थात् शरीर को स्वच्छ रखने के साथ–साथ मन, वाणी और कर्म को भी स्वच्छ रखना आवश्यक है। तात्पर्य यह है कि हमारी सोच और भावना सच्ची होनी चाहिए। हम जो कुछ बोलें वह दूसरों के लिए प्रतिकूल या अहितकर नहीं होना चाहिए, हमारा व्यवहार दूसरों के लिए कष्टकारी न हो। यदि हमारा मन और शरीर दोनों स्वच्छ हैं तो निश्चित रूप से हम ईश्वर के काफी करीब होते हैं और दूसरों के लिए कभी बुरा नहीं सोचते अर्थात् दुर्भावना रहित होते हैं। अतः शारीरिक शुद्धता के साथ–साथ वैचारिक शुद्धता भी आवश्यक है। मनुस्मृति में कहा गया है–

योर्थे शुचिर्हि सः शुचिर्न मृद्वारि शुचिः शुचिः।

शरीर की शुचिता (स्वच्छता) केवल सतही है। यह स्वच्छता जरूरी है, किंतु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है : धनार्जन संबंधी शुचिता। वास्तव में, वही व्यक्ति शुद्धि प्राप्त है, जिसने धनार्जन में शुचिता बरती हो। अर्थात् जिसने औरों को धोखा देकर, बेईमानी करके, लूटकर, घूस लेकर या अन्य अनुचित तरीकों से धन न कमाया हो।

इस प्रकार, स्वच्छता का सीधा संबंध केवल शारीरिक गंदगी के साथ न होकर हमारी सोच, हमारे विचार, हमारे दृष्टिकोण और हमारे आचरण से भी है। यदि हमारा मन शुद्ध होगा तो हम स्वयं को, परिवार को और समाज को बेहतर बनाने में योगदान करेंगे। स्वच्छता हमारे जीवन को विभिन्न रूपों में प्रभावित करती हैरू

- स्वास्थ्य – स्वच्छता का स्वास्थ्य से घनिष्ठ संबंध है। बीमारी फैलने का सबसे बड़ा कारण गंदगी है। कूड़े–कचरे के ढेर, नालियों के कीचड़ और सीलन एवं सड़ने में बीमारियां उत्पन्न करने वाले कीड़े पैदा होते हैं। बीमारियां इन कीड़ों को खत्म करने से नहीं, बल्कि गंदगी हटाने से दूर होती हैं। स्वच्छ परिवेश में रहने वाला व्यक्ति स्वस्थ और प्रसन्न रहता है। अंग्रेजी में कहा गया है– Healthy mind in Healthy body- अर्थात् स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है। इस प्रकार, स्वच्छता से मानसिक स्वास्थ्य भी सुनिश्चित होता है।

इसका दूसरा पहलू यह है कि तन और मन का परस्पर गहरा संबंध है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों का स्वास्थ्य एक दूसरे पर निर्भर करता है। यदि एक अस्वस्थ है तो दूसरा स्वस्थ नहीं हो सकता। अतः स्वस्थ मन से स्वस्थ तन का निर्माण संभव है। अर्थात शरीर को स्वस्थ रखने में विचारों और भावनाओं की शुद्धता की महत्वपूर्ण भूमिका है।

- दृष्टिकोण – जीवन में शुचिता धारण करने वाला व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ तो होता ही है, साथ ही, दुष्प्रवृत्तियों और दुर्भावना से रहित होने के कारण वह सदैव अपने साथ–साथ दूसरों का भी हित चाहता है। अच्छे–बुरे की पहचान करने में समर्थ होता है और हर परिस्थिति के साथ सामंजस्य बैठाते हुए संतुलित जीवन व्यतीत करता है। जीवन के प्रति उसका नजरिया सकारात्मक होता है।
- व्यक्तित्व – साफ–सुथरे शरीर वाले और हमेशा स्वच्छ वस्त्र धारण करने वाले व्यक्ति की ओर लोग स्वतः आकृष्ट होते हैं। उसकी तरफ ध्यान देते हैं। इसके साथ–साथ यदि वह मन का भी साफ है और उसका नजरिया सकारात्मक है तो उसके व्यक्तित्व में चार चांद लग जाते हैं। इससे उसका आत्मविश्वास बढ़ता है और उसके व्यक्तित्व में निखार आता है।
- संबंध– साफ–सुथरा दिखने वाले आकर्षक व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति, जो ईमानदार, निष्कपट और निश्छल हैं, से हर व्यक्ति जुड़ना चाहता है और उसके साथ संबंध रखना चाहता है। वह जीवन में बहुत से मित्र बनाने में सफल होता है। परिवार के सदस्यों और रिश्तेदारों के साथ उसके संबंध मधुर होते हैं। इसके विपरीत गंदगी पसंद, दुष्प्रवृत्तियों एवं नकारात्मक विचारों से युक्त और दुर्व्यवहार करने वाले तथा बिना सोचे–विचारे कुछ भी बोलने वाले व्यक्ति को कोई पसंद नहीं करता है और वह कभी दूसरों का विश्वास पात्र नहीं बन पाता है। उसके पारिवारिक संबंध भी अच्छे नहीं होते।
- लोकप्रियता–शरीर से स्वच्छ और स्वस्थ तथा साफ दिल वाला, सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाला, सद्व्यवहारी तथा आकर्षक व्यक्तित्व का धनी व्यक्ति अपने सद्गुणों के कारण समाज में स्वतः लोकप्रियता हासिल करता है। लोग उससे स्नेह करते हैं और सदैव उसके सहयोग के लिए तैयार रहते हैं।
- समृद्धि – दीपावली का त्यौहार इसी मान्यता पर आधारित है कि स्वच्छ घर में लक्ष्मी जी का आगमन होता है। लक्ष्मी जी प्रतीक हैं– समृद्धि और संपन्नता की। इसीलिए, इस दिन घर–दुकान आदि सब जगह साफ–सफाई की परंपरा है। यदि मानसिक स्वच्छता की बात करें तो समृद्धि का यह त्यौहार बुराई पर अच्छाई की जीत का भी है। अर्थात् समृद्धि के लिए दुष्प्रवृत्तियों और मानसिक विकारों का

नष्ट होना भी आवश्यक है। इस प्रकार, शरीर एवं मन की शुद्धि से समृद्धि आना स्वाभाविक है।

- आचरण और व्यवहार – जिस व्यक्ति का मन साफ होता है, जिसकी सोच में कोई दुर्भावना नहीं होती और जो निश्छल एवं निष्कपट होता है, उसके आचरण और व्यवहार में भी इसकी झलक मिलती है। वह सदाचार और परोपकार का मार्ग अपनाता है और दूसरे लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करता है। मनुस्मृति में कहा गया है–

आचाराल्लभते ह्यायुः आचारादीप्सिताः प्रजाः ।

आचाराद्धनमक्षयम् आचारो हन्त्यलक्षणम् ॥

अच्छे आचरण से व्यक्ति दीर्घायु होता है, श्रेष्ठ संतान प्राप्त होती है, अक्षय धन की प्राप्ति होती है तथा दोष नष्ट हो जाते हैं।

इस प्रकार, जीवन में स्वच्छता के सिद्धांत पर चलने वाले, विचारों में शुचिता धारण करने वाले और सदाचारी व्यक्ति का जीवन स्तर उन्नत होता है और उसे हर काम में सफलता मिलती है। परिवार और समाज में उसकी विशेष पहचान होती है। वह प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करता है।

आज, हमारे समाज और देश को तन और मन दोनों ही प्रकार की स्वच्छता की जरूरत है। समाज और देश को सुरक्षित और समृद्ध बनाने के लिए जरूरी है कि हर देशवासी स्वच्छता अपनाए और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करे। स्वच्छता के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण में योगदान करे और भारत सरकार के स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनाए। इससे भी ज्यादा जरूरी है कि वैचारिक स्वच्छता के माध्यम से परस्पर द्वेष– बैर, लोभ–मोह, स्वार्थपरता आदि की भावना को समाप्त किया जाए। यदि हर व्यक्ति अपने–अपने हिस्से का योगदान करेगा तो वह दिन दूर नहीं, जब हम विरोधी ताकतों का डटकर मुकाबला करेंगे और उन पर विजय प्राप्त करेंगे।

****

हिंदी भाषा का महत्व

राजेश मिश्रा
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी
इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड

हिंदी भाषा का इतिहास भारतीय समाज और संस्कृति के विकास से जुड़ा हुआ है। यह केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारत के लोगों के संवाद, उनके विचारों और उनकी भावनाओं की अभिव्यक्ति का साधन है। हिंदी ने विभिन्न कालखंडों में विकास की कई अवस्थाएँ देखी हैं, और समय के साथ यह नए परिवर्तनों के साथ आगे बढ़ी है। इसका सफर वैदिक काल से लेकर आज के डिजिटल युग तक फैला हुआ है, जहाँ इसके स्वरूप, शैली, और उपयोग में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलते हैं। हिंदी भाषा का आरंभिक स्वरूप संस्कृत से माना जाता है, जो कि भारत की सबसे प्राचीन भाषा है। संस्कृत से कई भाषाओं का जन्म हुआ, जिनमें हिंदी एक प्रमुख है। वेद, उपनिषद, महाकाव्य, और अन्य संस्कृत ग्रंथों के माध्यम से भारतीय सभ्यता का ज्ञान और दर्शन स्थापित हुआ। धीरे–धीरे यह भाषा क्षेत्रीय भाषाओं में विभाजित होने लगी, और हिंदी का प्रारंभिक स्वरूप उभर कर सामने आया। अपभ्रंश और प्राकृत जैसी बोलियाँ हिंदी के लिए आधारभूत साबित हुईं। मध्यकालीन भारत में हिंदी का स्वरूप और भाषा दोनों में बदलाव आने लगे। इस दौर में अमीर खुसरो जैसे कवियों ने इसे सरल और जनसाधारण के उपयोग के योग्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तुलसीदास, कबीर, सूरदास, मीराबाई जैसे भक्त कवियों ने हिंदी में रचनाएँ कीं और इसे धार्मिक एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। इस दौर में हिंदी ने भारतीय समाज में गहरी पैठ बनाई और विभिन्न क्षेत्रों में लोकभाषा के रूप में फैलने लगी। आधुनिक हिंदी का विकास 19वीं सदी में हुआ, जब भारत में अंग्रेजों का शासन था। अंग्रेजों ने भारत में शिक्षा और प्रशासन के लिए अंग्रेजी का प्रचार–प्रसार किया, जिसके चलते हिंदी को संघर्ष का सामना करना पड़ा। फिर भी, हिंदी भाषी लोगों ने हिंदी के संरक्षण और प्रचार के लिए आंदोलन किए। इस दौरान भारतेंदु हरिश्चंद्र जैसे साहित्यकारों ने आधुनिक हिंदी गद्य और पद्य की नींव रखी। उन्होंने हिंदी में नाटक, उपन्यास, कविता और निबंध लिखे और हिंदी को एक साहित्यिक भाषा का दर्जा दिलाने में मदद की। 20वीं सदी में महात्मा गांधी, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन जैसे नेताओं ने हिंदी को राष्ट्रीय भाषा बनाने के लिए जोर दिया। हिंदी को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एकता और संचार का साधन माना गया। स्वतंत्रता के बाद हिंदी को भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार किया गया। संविधान ने हिंदी को देवनागरी लिपि में आधिकारिक भाषा का दर्जा दिया, जिससे इसे देशभर में मान्यता मिली और यह तेजी से शिक्षित समाज का हिस्सा बनने लगी। आज, हिंदी का स्वरूप और उपयोग एक नई दिशा में अग्रसर हो चुका है। वैश्वीकरण और प्रौद्योगिकी के इस युग में, हिंदी का उपयोग डिजिटल प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया, और इंटरनेट पर व्यापक रूप से हो रहा है। लोग फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर जैसे मंचों पर हिंदी में अपने विचार साझा कर रहे हैं। गूगल, यूट्यूब, अमेजन जैसे बड़े तकनीकी प्लेटफॉर्म भी हिंदी में सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं, जिससे हिंदी भाषियों को इंटरनेट की सुविधा मिल रही है। इसका एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि आज हिंदी के स्वरूप में बहुत से अंग्रेजी शब्दों का समावेश हो गया है। इसके पीछे प्रमुख कारण यह है कि नई पीढ़ी ने हिंदी और अंग्रेजी दोनों को अपनाया है, जिससे एक मिश्रित भाषा का विकास हो रहा है। हिंदी साहित्य और सिनेमा में भी इस नए परिवर्तित हिंदी का असर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। पहले जहाँ साहित्यिक

हिंदी का उपयोग प्रमुखता से किया जाता था, वहीं अब सरल और जनसाधारण के समझ में आने वाली भाषा को प्राथमिकता दी जा रही है। कहानी, उपन्यास, और कविताएँ भी अब आम बोलचाल की भाषा में लिखी जा रही हैं, ताकि ये लोगों से जुड़ सकें और उनका प्रभाव अधिक हो। सिनेमा में भी हिंदी के प्रयोग का स्वरूप बदल गया है। पहले की फिल्मों में जहाँ शुद्ध हिंदी का प्रयोग किया जाता था, वहीं अब संवादों में हिंग्लिश का व्यापक रूप से प्रयोग हो रहा है। इस तरह की भाषा आज की पीढ़ी से अधिक आसानी से जुड़ती है। इसके साथ ही, इंटरनेट और ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर भी हिंदी कंटेंट की मांग बढ़ी है, जिससे हिंदी सिनेमा और साहित्य को नया विस्तार मिल रहा है। हालाँकि, हिंदी का प्रसार बढ़ा है, परंतु इसके सामने कई चुनौतियाँ भी हैं। प्रमुख चुनौती है – अंग्रेजी का बढ़ता दबाव। आज भी उच्च शिक्षा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और प्रशासन में अंग्रेजी का बोलबाला है। बहुत से लोग मानते हैं कि अंग्रेजी के बिना अच्छी नौकरी पाना कठिन है, जिससे हिंदी की महत्ता कम हो रही है। दूसरी चुनौती यह है कि हिंदी के कई क्षेत्रीय रूप हैं, जैसे अवधी, भोजपुरी, ब्रज, हरियाणवी आदि। इन भाषाओं के प्रति भी लोगों का जुड़ाव है, जिससे हिंदी को एकरूपता देने में कठिनाई होती है। इसके साथ ही, सोशल मीडिया पर शुद्ध हिंदी के स्थान पर अशुद्ध या आधी–अधूरी हिंदी का प्रयोग होने से हिंदी के मूल स्वरूप में भी बदलाव आ रहा है। फिर भी, हिंदी का भविष्य उज्जवल दिखता है। भारत की जनसंख्या का बड़ा हिस्सा हिंदी भाषी है, और हिंदी फिल्मों, टीवी धारावाहिकों, वेब सीरीज, और संगीत के माध्यम से यह लोगों के दिलों में अपनी जगह बना रही है। हिंदी को एक वैश्विक भाषा बनाने की कोशिशें हो रही हैं, और यह संयुक्त राष्ट्र में एक आधिकारिक भाषा बनने की दिशा में भी बढ़ रही है।साथ ही, नई पीढ़ी में हिंदी साहित्य और हिंदी पत्रकारिता के प्रति रुचि भी बढ़ रही है, जो इसे आगे बढ़ाने में सहायक है। आज हिंदी का प्रभाव भारत की सीमाओं से बाहर भी फैल गया है। प्रवासी भारतीय और हिंदी भाषी समुदाय पूरी दुनिया में फैले हुए हैं, जिससे हिंदी का प्रचार–प्रसार वैश्विक स्तर पर हो रहा है। अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, और खाड़ी देशों में बसे प्रवासी भारतीय अपने बच्चों को हिंदी सिखाने के लिए प्रयासरत हैं। इससे हिंदी केवल भारत की नहीं, बल्कि विश्व की एक महत्वपूर्ण भाषा बन रही है। संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर हिंदी का उपयोग बढ़ाने की मांग भी जोर पकड़ रही है। सरकार भी हिंदी को वैश्विक मंच पर स्थापित करने के लिए प्रयासरत है, ताकि यह भाषाई विविधता का हिस्सा बन सके। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी साहित्य और सिनेमा की लोकप्रियता भी इसकी प्रासंगिकता को दर्शाती है। भारतीय फिल्में, खासकर बॉलीवुड का प्रभाव दुनियाभर में है, जिससे हिंदी संगीत, संवाद, और संस्कृति को दुनिया भर में पहचाना जा रहा है। भारत में शिक्षा प्रणाली में हिंदी का स्थान मजबूत है। अधिकांश राज्यों में प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा में हिंदी को एक अनिवार्य भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है। साथ ही, केंद्रीय विद्यालयों और राज्य सरकारों के स्कूलों में हिंदी का उपयोग बढ़ रहा है। लेकिन उच्च शिक्षा में अंग्रेजी का प्रभाव अधिक है, जिससे कई छात्र हिंदी में उच्च शिक्षा प्राप्त करने में संकोच करते हैं। यह एक बड़ी चुनौती है, जिसे हल करने के लिए नीतिगत प्रयासों की आवश्यकता है। हाल के वर्षों में कुछ प्रमुख विश्वविद्यालयों और संस्थानों ने हिंदी में उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षा के लिए नए पाठ्यक्रम शुरू किए हैं। इसके माध्यम से यह कोशिश की जा रही है कि हिंदी में भी वैज्ञानिक, तकनीकी, और व्यावसायिक शिक्षा का विस्तार हो सके, ताकि छात्रों को अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिल सके। इस दिशा में भारतीय सरकार और विश्वविद्यालयों के प्रयास प्रशंसनीय हैं, लेकिन इसे और प्रोत्साहन की आवश्यकता है। हिंदी साहित्य आज भी समृद्ध और विविध है। आजकल ब्लॉगिंग, पॉडकास्ट, और वेब पत्रिकाओं के माध्यम से नए लेखकों को अपनी बात कहने का मंच मिला है, जिससे हिंदी साहित्य के क्षेत्र में नवाचार हो रहा है। डिजिटल युग में हिंदी भाषा ने तकनीकी रूप से भी कई उपलब्धियाँ हासिल की हैं। गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, और फेसबुक जैसे प्रमुख तकनीकी कंपनियों ने हिंदी में सामग्री और सेवाएँ प्रदान करना शुरू कर दिया है, जिससे हिंदी भाषी लोग डिजिटल दुनिया से जुड़ रहे हैं। इसके अलावा, अब हिंदी में कीबोर्ड और स्वचालित अनुवाद की सुविधा भी उपलब्ध है, जिससे हिंदी का उपयोग और अधिक सुविधाजनक हो गया है। आज अनेक वेबसाइटें और ब्लॉग हिंदी में उपलब्ध हैं, जो लोगों को हिंदी में सामग्री पढ़ने और साझा करने की सुविधा देती हैं। भारत में ई–कॉमर्स और ऑनलाइन शॉपिंग प्लेटफॉर्म भी हिंदी में सेवाएँ दे रहे हैं, जिससे यह साबित होता है कि हिंदी का डिजिटल क्षेत्र में भी

एक मजबूत आधार है। हिंदी का भविष्य संभावनाओं से भरा हुआ है। इसे और अधिक सशक्त बनाने के लिए कई प्रयास किए जा सकते हैं। शिक्षा प्रणाली में हिंदी को और बढ़ावा देने, उच्च शिक्षा में हिंदी माध्यम की संभावनाओं को बढ़ाने, और तकनीकी क्षेत्र में हिंदी को एक उपयोगी भाषा बनाने की दिशा में प्रयास किए जा सकते हैं। इसके साथ ही, हिंदी साहित्य और कला को बढ़ावा देने के लिए साहित्यिक समारोहों, पुस्तक मेलों, और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जा सकता है। इससे नई पीढ़ी को हिंदी से जुड़ने का अवसर मिलेगा और वे अपनी जड़ों से जुड़े रहेंगे। हिंदी के विकास के लिए सरकारी प्रयासों के साथ–साथ व्यक्तिगत स्तर पर भी जागरूकता की आवश्यकता है। यदि हम हिंदी को अपने दैनिक जीवन में शामिल करें, इसे गर्व के साथ बोलें और लिखें, तो निश्चित ही हिंदी का विकास और प्रगति होगी। अतः हिंदी भाषा ने भारत और भारतीयों के साथ हर समय कदम से कदम मिलाकर विकास किया है। यह केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारत की आत्मा और संस्कृति का प्रतीक है। समय के साथ हिंदी ने आधुनिकता और वैश्वीकरण के साथ तालमेल बिठाने की कोशिश की है, और इसमें काफी हद तक सफलता भी पाई है। भले ही आज के दौर में अंग्रेजी और अन्य भाषाओं का प्रभाव बढ़ रहा हो, परंतु हिंदी का महत्व कम नहीं हुआ है। यह भाषा एकता, सांस्कृतिक धरोहर, और राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक बनी हुई है। यदि हम इसके संरक्षण और प्रचार–प्रसार के लिए प्रयासरत रहें, तो हिंदी का भविष्य उज्जवल रहेगा और यह आने वाली पीढ़ियों के लिए भी उपयोगी बनी रहेगी।

****

नया दौर

रमेश चंद
मुख्य प्रबंधक – राजभाषा
हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड

सुधा का रोना रुक ही नहीं रहा था। अनवरत आँसू बहाए जा रही थी। क्या गम था या ऐसा कौन सा पहाड़ टूट गया था कि उसके आँसू रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे। पास ही उसके पति संजय जड़वत मूर्ति की तरह बैठे थे। वो रो तो नहीं रहे थे लेकिन चेहरे पर ऐसी मायूसी, ऐसे भाव थे कि जैसे इनका कोई सगा संबंधी स्वर्ग सिधार गया हो या कोई बिजनेस में बहुत बड़ा नुकसान हो गया हो। शून्य में ताके जा रहे थे । लग रहा था कि वो अपने आप में नहीं हैं, किसी अलग ही दुनिया में खोए हुए हैं। पास में उनकी पत्नी लगातार रो रही थी, आँसू बहाए जा रही थी लेकिन मजाल है कि उन्होंने पत्नी को रोने से रोका हो या उसके आँसू ही पोछें हो। तभी संजय ने सुधा के बड़बड़ाने की आवाज सूनी। आने दो आज नेहा को, बहुत छूट दे ली अब पानी सिर से निकला जा रहा है। हमारी शराफत को उसने हमारी कमजोरी समझ लिया है। कितने नाजों से हमने उसको पाला है, कितना प्यार दिया हमने अपनी लाडली को, किसी चीज की कोई कमी नहीं होने दी। उसकी हर एक छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी मांग को कैसे भी पूरा करते थे। करते भी क्यों न। सब की आँखों का तारा थी और हमारी इकलौती संतान थी। स्कूल में भी हर कक्षा में हमेशा वह प्रथम आती थी। स्कूल टीचर उसकी प्रशंसा करते नहीं थकते थे। कहते थे कि ऐसी बेटी तो नसीब वालों को मिलती है। उनका सीना भी गर्व से चौड़ा हो जाता था। नेहा बड़ी हुई और कॉलेज जाने लगी। पढ़ने में तेज और माता पिता का कहना मानने वाली लड़की कब बड़ी हो गई उन्हें पता ही नहीं चला। बहुत अच्छे से दिन निकल रहे थे कि आज एक विस्फोट हो गया जिसने सुधा और संजय की नींद चैन हराम कर दिया। सुधा की सहेली ने उसको एक विडियो भेजा जिसमें उसकी बेटी नेहा किसी लड़के के साथ बहुत ही अभद्र तरीके से मैट्रो में चिपटी हुई दिख रही है और विडियों में कभी कभी वो लड़का गाल भी चूम रहा था। लड़का देखने में कोई बहुत अच्छे संस्कारों वाला भी नहीं लग रहा था, वेशभूषा भी उसकी अच्छी नहीं थी। कभी उसकी कमर को अपनी बाहों में कस लेता और उसे अपने साथ चिपका लेता और कभी उस पर झूल जाता। नेहा उसे कुछ भी नहीं कह रही थी, मानो उसे यह सब करने के लिए उसने उसको मौन स्वीकृति दे रखी हो। विडियों में लिखा आ रहा था देखो आज के संस्कार विहिन बच्चे। हे भगवान, मैट्रो में ऐसे गुल खिला रही है हमारी लड़की। हमने तो उसे हमेशा अच्छे संस्कार ही दिए हैं। सुधा ने गौर किया कि नेहा ने अपनी ड्रेस भी बदली हुई थी। जो घर से पहन कर गई थी वो उस ड्रेस में वो नहीं थी। जाने कितने और उनके जानने वालों ने यह विडियो देखा होगा। हमारी तो नाक ही कटवा दी इस लड़की ने। क्या मुँह लेकर अब हम घर से बाहर जा पाएंगे। हो सकता है कि संजय के किसी सहकर्मी के पास भी यह विडियो चला गया होगा। वो कैसे अपने ऑफिस में जा पाएंगे और कैसे सबसे नजरे मिला पाएंगे। आज दोनों के लिए ऐसा दिन था कि जैसे उनके घर में कोई मौत हो गई हो और वो उसका शोक मना रहे हैं। सुधा सोच रही थी कि अपनी सहेली से पूछे कि उसे यह विडियो कहाँ से मिला। ऐसे विडियो वायरल होते देर भी कहाँ लगती है। यही सोच कर दोनों बहुत सदमे में थे। उन्हें कुछ समझ नहीं आ रहा था कि अब वो क्या करें। नेहा अभी तक घर नहीं आई थी। अब तो जैसे जैसे समय बीत रहा था उनकी चिन्ता और बढ़ रही थी। पहले नेहा देर से भी आती थी तो उनका उस पर विश्वास कायम था लेकिन अब उनकी समझ में आ गया कि नेहा के देर से आने का कारण कोई पढ़ाई या एक्सट्रा क्लास नहीं बल्कि यह अलग ही मामला था।

नेहा अंधेरा होने पर घर आई तो सुधा देख कर हैरान हो गई कि नेहा ने अब वही ड्रेस पहनी थी जो घर से पहन कर गई थी यानि मैट्रो वाली ड्रेस उसने बदल ली। लेकिन कहाँ, यह सोच उसके मन में बुरे बुरे ख्याल आने लगे। कहीं लड़के के साथ उसके घर तो नहीं बदले या कहीं किसी होटल में तो नहीं ले गया वो नेहा को। नेहा आई तो उसने ऐसे जताया कि कॉलेज में बहुत पढ़ कर आ रही है। मम्मी आज क्या बनाया है खाने में, जल्दी दो ना बहुत भूख लगी है। नेहा देख भी नहीं पाई कि माँ कि आँखें तो रो रोकर लाल हो रखी है और पास में पापा भी तो हैं एकदम मूर्तिवत बैठे हुए। उसने अपने पापा को ऐसे बैठे हुए बहुत कम देखा था। भूल गई कि उसके आते ही पापा कैसे चहक कर पूछते थे कि आ गई मेरी रानी बिटिया। माँ का तो गुस्से से चेहरा तमतमा गया और उसने अपना मोबाइल उसके सामने रख दिया वह विडियो चला कर। नेहा ने वह विडियो देखा और उसके चेहरे पर ऐसे भाव कि जैसे कुछ हुआ ही न हो। सुधा ने गुस्से में पूछा कि यह क्या है और ऐसा क्यों है। तुम्हें मैट्रों में यह सब करते शर्म लाज नहीं आई। क्या यही दिन देखने के लिए हमने तुम्हें कॉलेज भेजा था। तुम्हें हमारी इज्जत की कोई परवाह भी है या नहीं। पास ही पापा बैठे थे लेकिन सुधा बोल रही थी इसलिए कुछ नहीं कह रहे थे वर्ना उनका मन तो ऐसा कि अपनी लाडली को आज जी भरकर पीटें। बस इतना कहा कि तुमने हमें कहीं का नहीं छोड़ा। नेहा जो अभी तक चुप बैठी हुई थी और जिस पर इस विडियो को कोई भी असर नहीं हुआ था, एकदम बिफर पड़ी तो इसमें कौन सा पहाड़ टूट पड़ा। राहुल मेरा दोस्त है, बहुत अच्छा लड़का है। हमने ऐसा क्या गलत कर दिया जो आप ऐसे व्यवहार कर रहे हो। आपके जमाने की बात कुछ और थी। आज जमाना बदल गया है। यह नया दौर है। आपको भी अपने आप को बदलना चाहिए। लड़के लड़की अच्छे दोस्त हैं, साथ साथ पढ़ते हैं, हंसते खेलते हैं तो इसमें बुरा क्या है। सुधा बोल उठी तो इसमें भरी मैट्रो में चूमना भी शामिल है क्या। अरे तो क्या हुआ। राहुल से मैं बहुत प्यार करती हूँ और वो भी मुझसे बहुत प्यार करता है, उसने मुझे चूम लिया तो क्या हुआ। हे भगवान, सुधा माथा पीट कर रह गई। यह लड़की को समझ ही नहीं है कि उसकी इस हरकत ने उनपर कैसा वज्रपात किया है। मैट्रो में, भारी भीड़ के बीच में ऐसी हरकत को नेहा उचित बता रही थी। आप किस दुनिया में रह रहे हो। आप का जमाना बहुत दकियानूसी वाला था, आज जमाना बदल गया है। यह नया दौर है। सभी को अपने हिसाब से जीने की आजादी है।

नेहा के मुंह से ऐसी बाते सुन कर सुधा और संजय जमीन में गढे जा रहे थे। सोच नहीं पा रहे थे कि हमने ऐसी कौन सी गलती कर दी या नेहा को कौन से संस्कार देने में कमी कर दी जिसके कारण वो आज इस रास्ते पर चल पड़ी है। नेहा ने खुद ही किचन से खाना उठा लिया और खाने लगी। माँ बाप किस हालात में हैं उसकी भी उसको चिन्ता नहीं थी। वो कुछ भी कह रहे थे लेकिन नेहा को कोई फर्क नहीं पड़ रहा था। वो तो चिकना घड़ा बनी हुई थी। उनकी किसी भी बात का उस पर कोई असर नहीं था। दोनों ने आज खाना नहीं खाया और बहुत ही उदास मन से सो गए। सुबह दोनों ने नेहा के कॉलेज जाने का मन बनाया और तैयार होकर उसके कॉलेज गए। वहाँ भी उसके अध्यापकों से जो सुना, उसे सुन कर वो बिल्कुल टूट गए। नेहा कभी–कभी क्लास में जाती थी और पढ़ाई में उसका ध्यान बहुत कम था। कॉलेज की परीक्षा में भी उसका परिणाम अच्छा नहीं था। आज दोनों कॉलेज से घर को आए तो उन्होंने अपने मन में एक निश्चय कर लिया कि अब वो नेहा की गलतियां और बर्दाश्त नहीं करेंगे। आज उससे बात करके कोई न कोई फैसला जरूर लेंगे। चाहे कोई कठोर निर्णय ही क्यों न लेना पड़े। नेहा के भविष्य के लिए वो कुछ भी करने को तैयार हो गए थे।

नेहा कल की तरह फिर घर देरी से आई और आते ही खाने की फरमाइश। सुधा ने उसको खाना दिया और खाने के बाद उसको अपने कमरे में आने को कहा जहाँ संजय पहले से ही बैठे थे। उन्होंने नेहा को बताया कि वो आज उसके कॉलेज गए थे और उन्होंने उसके सामने उसका परीक्षा परिणाम और कॉलेज में उसकी हाजिरी का विवरण रख दिया। नेहा पर इसका भी कोई असर न होते देख, संजय ने उसके नर्सरी से लेकर दसबीं तक के परीक्षा परिणाम और स्कूल के अध्यापकों के द्वारा उसको दिए गए प्रशंसा पत्र उसके सामने रख दिए। दोनों ने बड़े प्यार से उसको बताया कि बेटा हम जानते हैं कि यह नया दौर है लेकिन क्या यह नया दौर आपको कीचड़ में धसने के लिए कहता है। आप स्कूल में पढ़ाई में समझो तो माउंट एवरेस्ट पर थी लेकिन क्या नया दौर आपको पढ़ाई में समुद्र तल में जाने को कहता है। स्कूल में सभी अध्यापक आप पर

कितना गर्व करते थे और वहीं कॉलेज के अध्यापक आपका नाम सुनकर आपके बारे में बात भी नहीं करना चाहते। हमारे सभी पड़ोसी तुम पर कितना प्यार लुटाते थे, अपने बच्चों को तुम सा बनने को कहते थे और तुम भी तो सुबको उनकी पढ़ाई में कितना मदद करती थी। याद है एक बार तुम बहुत बीमार हो गई थी तो तुम्हारे सभी अध्यापक और तुम्हारी कक्षा के बच्चे अस्पताल में एकत्र हो गए थे। हमारे कितने ही पड़ोसी तुम्हारे लिए मंदिरों में पूजा करने गए थे और भगवान से तुम्हारी कुशलता की कामना की थी। क्या दौर था वह लेकिन नये दौर ने तो सब बदल दिया। नया दौर क्या सब बदलने के लिए कहता है। नहीं न बेटी। वो तो तुम्हें उससे भी आगे जाने के लिए कहता है। हमने तुम्हारे दोस्त के बारे में भी पता किया है। जानती हो तुमसे पहले भी वह कम से कम 4 लडकियों को अपना दोस्त बना कर उनकी जिदंगी खराब कर चुका है। क्या तुम्हें उसने अपने कॉलेज के बारे में बताया है। नहीं बेटी, हमने उसके बारे में पता किया है, वो एक बेरोजगार युवक है जो कोई कॉलेज में नहीं पढ़ता है और आवारागर्दी करता रहता है। हम पर अगर विश्वास न हो तो कल उसको बोलना कि तुम्हें उसका कॉलेज देखना है। आज उसके साथ तुम्हारा एक विडियो वायरल हुआ है, कल शायद फिर से कोई ऐसा ही विडियो वायरल हो जाए। तुम्हारी पढ़ाई तो खराब हो ही रही है साथ ही तुम्हारी इज्जत और हमारी इज्जत की धज्जियां भी उड़ रही है। तुम्हारी पढ़ाई भी खराब हो जाएगी और इज्जत भी, तब क्या करोगी। यह लड़का तो एक दिन तुम्हें छोड़कर चला जाएगा लेकिन जिंदगी भर का दाग तुम्हें दे जाएगा। पढ़ाई तुम्हारी खराब हो जाएगी और इन कारणों से हम तुम्हारी शादी कहीं भी नहीं कर पाएंगे। क्या तुम हमें उम्र भर के लिए सबकी नजरों से गिरा हुआ देखना चाहती हो।

संजय ने कहा की बेटी मानता हूँ कि यह नया दौर है और सबको अपनी आजादी से जीने का हक है लेकिन ऐसा भी क्या जीना कि वो हमारे लिए नासूर बन जाए। फैसला तुम्हें लेना है। पुराने दौर की नेहा बनना है या नये दौर की नेहा। नये दौर की नेहा बनना है तो पुराने दौर की नेहा से और अच्छा बनो। नेहा को उनकी बात कुछ कुछ समझ में आ रही थी लेकिन उस लड़के का रंग उस पर कुछ ऐसा चढ़ा था कि वो अभी भी उनसे बहस कर रही थी कि वो गलत नहीं है। आखिर में सुधा ने कहा कि ठीक है तुम सही हो लेकिन जो हमने कहा है कल एक बार वैसा करके देखना। अगर वो कोई कॉलेज जाता होगा तो आपको पता चल जाएगा और अगर वो सिर्फ तुमसे खेल खेल रहा है तो तुम्हें वो भी पता चल जाएगा। फिर आगे तुम्हारी जो भी मर्जी हो वही करना।

आज सुधा और संजय के मन से बड़ा भारी बोझ उतर गया था। उन्होंने अपनी बेटी को सही रास्ते पर लाने के लिए उसे गलत सही का भेद बता दिया था। उन्होंने तय कर लिया था कि वो अपनी बेटी को मझधार में नहीं छोडेंगे। यदि उसने उनकी बात अभी भी नहीं मानी तो वो फिर से कोशिश करेंगे और इसके लिए उसके स्कूल के अध्यापकों एवं अपने पड़ोसियों से भी मदद मांगेंगे। सुबह नेहा को उन्होंने अच्छे से चाय नाश्ता कराया और उसके पापा ने कहा कि आज वो नेहा को उसके कॉलेज छोड़कर आएंगे तो सुधा ने कहा कि वो भी साथ चलेंगी क्योंकि आते हुए रास्ते में उन्हें कुछ काम है, वो भी हो जाएगा। नेहा समझ रही थी वो जानबूझकर उसके साथ जा रही हैं ताकि वो अपने दोस्त से न मिल पाए। उन्होंने नेहा को उसके कॉलेज के गेट के पास उतार दिया और वापिस चल दिए। अचानक संजय ने कार के बैक मिरर से देखा कि नेहा कॉलेज जाने के बजाय किसी लड़के के साथ बाइक पर जा रही है। उन्हें उसको रात को दिया गया सारा ज्ञान व्यर्थ जाता दिख रहा था। संजय ने सुधा से कहा कि उन्हें नेहा को सही रास्ते पर लाने के लिए स्कूल के अध्यापकों की मदद लेनी पड़ेगी। दोनों घर आ गए। संजय का ऑफिस जाने का मन नहीं था। क्या पता वह विडियो उसके सहकर्मियों को भी मिला होगा। सभी बाते बनाएंगे, उससे तरह–तरह के सवाल करेंगे। कहीं कोई पड़ोसी उस वायरल विडियो की बात न पूछ ले यह सोचकर सुधा भी घर से बाहर नहीं निकली।

शाम को नेहा आज और दिनों की अपेक्षा घर जल्दी आ गई थी और घर पर पापा को देख कर हैरान हो गई। पापा आज आप ऑफिस नहीं गए। चलो अच्छा है आज सब इकट्ठा बैठ कर चाय पीयेंगे। मम्मा प्लीज चाय और पकौड़े बना दो जल्दी से। बेसन का घोल आप बना लो और मैं आलू व प्याज काट देती हूँ। पकौड़े जल्दी बन जाएंगे। चाय में अदरक और इलायची भी डाल देना। सुधा और संजय उसका यह रूप देखकर

हैरान थे। खैर सुधा ने जल्दी जल्दी से चाय और पकौड़े बनाए और सभी साथ में चाय और पकौड़े खाने लगे। चाय पीने और पकौड़े खाने के बाद नेहा रोने लगी और अपनी पापा मम्मी के पैरो में गिरकर माफी मांगते हुए कहने लगी कि पापा आपका पुराना दौर ही अच्छा था। मैं बहुत बड़ी गलती करने जा रही थी, अपने हाथों अपना भविष्य खराब कर रही थी। आपने मेरी आँखें खोल दी। आपने जब मुझे कॉलेज छोडा था तो मैं जानबूझकर राहुल के साथ चली गई थी और मैंने कहा कि मुझे आज अपना कॉलेज दिखा दो। वो टालमटोल करने लगा और बोला कि आज उसका मन नही है कॉलेज जाने का। मेरे बार बार कहने पर भी नही गया। फिर वो मुझे एक कैफे में ले गया और चाय समौसे का ऑर्डर देकर वॉशरूम चला गया। पास के टेबल पर तीन लड़किया मुझे देख कर कुछ खुसर–फुसर कर रही थी। एक ने कहा कि देखो राहुल आज एक नई लडकी को लाया है । न जाने कितनी लडकियों को अपने जाल में फंसा रखा है। मैंने उनकी बातें सुन ली और मुझे अपनी गलती का अहसास हुआ । उसके आने के बाद मैंने उसको कहा कि कॉलेज में मेरा आज एक बहुत महत्वपूर्ण लैक्चर है और वो मुझे जल्दी वहां छोड दें । अब मैंने कसम खा ली है कि आज के बाद उससे कभी नही मिलूंगी। मैंने आपको बहुत दुख दिया है, मुझे माफ कर दें। मैं आगे से ऐसी गलती नहीं करूंगी और आपको पुराने दौर वाली नेहा बन कर दिखाऊंगी। कल आपने मुझे जो समझाया था मैंने उसकी असलियत जानने के लिए वही किया और उस लड़के की असलियत मेरे सामने आ गई। यदि आप मुझे न समझाते तो मेरी जिंदगी बर्बाद हो जाती। संजय ने कहा कि बेटा दौर कोई खराब नहीं होता। यह सही है कि आज का दौर नया दौर है और पहले से काफी बदला हुआ है। हमें तो नये दौर वाली नेहा चाहिए। बताओ क्या तुम हमारे लिए बनोगी नये दौर की नेहा। नेहा ने पापा के गले लगते हुए सिर हिलाकर अपनी स्वीकृति दी और बोली मम्मी पापा आपका पुराना दौर भी बहुत अच्छा था लेकिन अब नेहा का गलत वाला नया दौर नहीं बदला हुआ अच्छा नया दौर आएगा।

****

पर्यटन की दृष्टि से मिर्जापुर: एक अवलोकन

सत्येन्द्र कुमार दूबे
हिंदी अनुवादक/राजभाषा
इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड

मैं मिर्जापुर का निवासी होने के नाते, मैं अपने जिला के बारे में अपने व्यक्त विचारों से अवगत करा रहा हूँ। भारत के हृदय में स्थित मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश का एक ऐसा नगर है, जो अपनी प्राकृतिक सौंदर्यता, सांस्कृतिक धरोहर, और धार्मिक स्थलों के लिए प्रसिद्ध है। गंगा नदी के किनारे बसे इस नगर ने अपनी ऐतिहासिक और भौगोलिक विशेषताओं के कारण भारत के पर्यटन मानचित्र पर अपनी एक विशेष पहचान बनाई है। मिर्जापुर के पर्यटन स्थलों, उसकी धार्मिक महत्ता, प्राकृतिक चमत्कारों और सांस्कृतिक परंपराओं का विस्तृत अवलोकन प्रस्तुत करता है। मिर्जापुर का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। इसे प्राचीन काल में 'चुनार' के रूप में जाना जाता था। इसका उल्लेख महाभारत और पुराणों में भी मिलता है। इस नगर के विभिन्न किले और स्मारक मुगलों और ब्रिटिश काल की वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। चुनार का किला, जो इस क्षेत्र का सबसे प्रमुख ऐतिहासिक स्थल है, मौर्य काल से लेकर अंग्रेजों तक के शासनकाल का साक्षी रहा है।

मिर्जापुर का प्राकृतिक सौंदर्य इसे अन्य स्थलों से अलग बनाता है। यहाँ की विंध्याचल पर्वतमाला और गंगा नदी के किनारे का दृश्य मनमोहक है। यह स्थान पर्वतारोहण, ट्रैकिंग, और प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग समान है। विन्ध्य पर्वत पर स्थित जलप्रपात, जैसे कि विंडम फॉल और तारकेश्वर फॉल, पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इन जलप्रपातों की गूंज और आसपास का हरा–भरा वातावरण किसी को भी मंत्रमुग्ध कर देता है। मिर्जापुर का धार्मिक दृष्टि से भी अत्यधिक महत्व है। यहाँ स्थित विंध्याचल धाम भारत के 51 शक्तिपीठों में से एक है, जहाँ मां विंध्यवासिनी का मंदिर स्थापित है। यह स्थान नवरात्रि के समय विशेष रूप से भीड़भाड़ से भर जाता है, जब श्रद्धालु माँ के दर्शन के लिए यहाँ आते हैं। इसके अतिरिक्त, काली खोह, अष्टभुजा मंदिर और तारकेश्वर धाम भी धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। इन स्थलों की पवित्रता और शांति मन को आत्मिक सुकून प्रदान करती है। विंध्यवासिनी का मंदिर भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के विंध्याचल क्षेत्र में स्थित एक प्रसिद्ध हिंदू तीर्थ स्थल है। यह मंदिर देवी दुर्गा के रूप में विंध्यवासिनी के पूजन हेतु समर्पित है और विशेष रूप से शक्ति पीठों में से एक माना जाता है। यह मंदिर विंध्य पर्वत की उपत्यका में स्थित है, जो अपने धार्मिक महत्व के लिए जाना जाता है। मंदिर का इतिहास बहुत प्राचीन है और इसे महाकवि कालिदास द्वारा भी संदर्भित किया गया है। यहां देवी विंध्यवासिनी की पूजा महाकवि द्वारा वर्णित "महाकाली" के रूप में की जाती है। यह स्थान न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि इसका ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व भी अत्यधिक है। मान्यता है कि इस स्थान पर देवी ने दैत्य बलि को पराजित किया था, जिससे यह स्थान अत्यंत पवित्र माना जाता है। मंदिर के गर्भगृह में देवी की मूर्ति स्थापित है, जिसे भक्त श्रद्धा से पूजते हैं। यह मूर्ति 3 फीट ऊंची है और इसमें देवी की तीन आंखों वाली रूप में पूजा होती है। मंदिर के आंगन में एक विशाल शिला स्थित है, जिसे विशेष रूप से पूजा के समय स्नान कराया जाता है। विंध्यवासिनी मंदिर के आसपास कई अन्य धार्मिक स्थल भी हैं, जैसे कि रानी का तालाब, जहां श्रद्धालु स्नान कर पुण्य लाभ प्राप्त करते हैं। यहां हर साल विशेष रूप से नवरात्रि के दौरान भारी भीड़

होती है, जब भक्तों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। इस दौरान विशेष पूजा–अर्चना और भव्य आयोजन किए जाते हैं। कुल मिलाकर, विंध्यवासिनी मंदिर न केवल धार्मिक महत्व का केंद्र है, बल्कि यह भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का भी प्रतीक है।

मिर्जापुर अपनी सांस्कृतिक विविधता और परंपराओं के लिए भी जाना जाता है। यहाँ की प्रमुख बोलियाँ अवधी और भोजपुरी हैं, जो इस क्षेत्र की लोकसंस्कृति का प्रतिनिधित्व करती हैं। मिर्जापुर के मेलों और उत्सवों में धार्मिकता और सांस्कृतिक रंग एक साथ देखने को मिलता है। विंध्याचल का नवरात्र मेला और गंगा किनारे का कार्तिक पूर्णिमा का उत्सव विशेष रूप से प्रसिद्ध है। मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश राज्य का एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण शहर है, जो अपनी अद्वितीय परंपराओं, धार्मिक स्थलों और सांस्कृतिक विविधताओं के लिए प्रसिद्ध है। यह शहर गंगा नदी के किनारे स्थित है और इसका ऐतिहासिक और सांस्कृतिक योगदान भारतीय सभ्यता में विशेष स्थान रखता है। मिर्जापुर न केवल धार्मिक स्थल के रूप में, बल्कि अपनी लोक कला, संगीत, त्योहारों और खानपान के लिए भी जाना जाता है। मिर्जापुर की सांस्कृतिक विविधता में हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई और अन्य समुदायों के लोग मिलकर रहते हैं, जो अपनी अलग–अलग परंपराओं और रीति–रिवाजों का पालन करते हैं। यहां परंपरागत हिंदू पूजा–पाठ, मुस्लिम त्योहारों की धूम, और सिख धर्म के गुरुद्वारों में की जाने वाली सेवा की परंपराएं देखने को मिलती हैं। यह शहर अपनी लोक कला और संगीत के लिए भी प्रसिद्ध है, खासकर मिर्जापुर के पंढरिनाथ गाने और बनारसी साड़ी, जो पूरी दुनिया में मशहूर हैं। मिर्जापुर में प्रमुख त्योहारों में होली, दीपावली, रक्षाबंधन, ईद, क्रिसमस, गुरुपुरब और छठ पूजा जैसी विविधताएं मनाई जाती हैं, जो इस शहर की सांस्कृतिक विविधता को और भी उजागर करती हैं। यहां के लोग सभी धार्मिक अवसरों को उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाते हैं, जिससे एकता और भाईचारे का संदेश मिलता है। मिर्जापुर में संगीत और कला का विशेष स्थान है, और यहां के लोग विशेष रूप से लोक संगीत, ठुमरी, दादरा और कथक जैसी कला रूपों में माहिर हैं। मिर्जापुर के प्रसिद्ध भजन और म्यूजिक फेस्टिवल्स, जैसे कि राधा–कृष्ण भजन संध्या और संगीत महोत्सव, यह दिखाते हैं कि यहां की सांस्कृतिक जीवनशैली कितनी जीवंत और विविध है। शहर का खानपान भी इसकी सांस्कृतिक धरोहर का एक अहम हिस्सा है। यहां की मशहूर व्यंजन जैसे कचौड़ी, सॉवला, चाट, और मिठाइयाँ इस क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक धारा को दर्शाती हैं। कुल मिलाकर, मिर्जापुर अपनी सांस्कृतिक विविधता, धार्मिक परंपराओं और लोक कला के कारण न केवल उत्तर प्रदेश में, बल्कि पूरे भारत में एक विशिष्ट स्थान रखता है। यहां की परंपराएँ और सांस्कृतिक धरोहर आज भी जीवित हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

मिर्जापुर अपनी कालीन उद्योग के लिए विश्वप्रसिद्ध है। यहाँ की बनी कालीनें अपनी गुणवत्ता और कलात्मकता के कारण देश–विदेश में निर्यात की जाती हैं। मिर्जापुर का हस्तशिल्प और यहाँ के मिट्टी के बर्तन भी पर्यटकों के बीच आकर्षण का केंद्र होते हैं।

मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश का एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध शहर है, जो अपने कालीन उद्योग और हस्तशिल्प के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। यहाँ की कालीनों की गुणवत्ता, डिजाइन और बुनाई तकनीक ने मिर्जापुर को एक खास पहचान दिलाई है। मिर्जापुर की कालीनें हाथ से बुनी जाती हैं और इनकी बनावट में न केवल शिल्प कौशल बल्कि विभिन्न सांस्कृतिक प्रभावों का समावेश होता है। इन कालीनों में पारंपरिक और आधुनिक डिजाइनों का मिश्रण होता है, जो इन्हें और भी आकर्षक बनाता है। मिर्जापुर की कालीनों की खास बात यह है कि इनका निर्माण स्थानीय कारीगरों द्वारा बड़े ध्यान और मेहनत से किया जाता है। यहां की कालीनों में बारीक बुनाई और जीवंत रंगों का प्रयोग होता है, जो इनकी खूबसूरती को बढ़ाते हैं। मिर्जापुर की कालीनों को विभिन्न देशों में निर्यात किया जाता है, और ये उच्च गुणवत्ता और दीर्घकालिक टिकाऊपन के लिए प्रसिद्ध हैं। खासकर, यूरोप और मध्य पूर्व के देशों में इन कालीनों की भारी मांग है। इस उद्योग ने मिर्जापुर को न केवल आर्थिक दृष्टि से समृद्ध किया है, बल्कि यह शहर की सांस्कृतिक धरोहर को भी जीवित रखा है। इसके अलावा, मिर्जापुर का हस्तशिल्प भी अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है। यहां के कुम्हार समुदाय द्वारा बनाए गए मिट्टी के बर्तन, घड़े, दीपक और मूर्तियाँ विशेष रूप से पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। ये बर्तन न केवल उपयोगी होते हैं, बल्कि इनकी कला और

डिजाइन भी अत्यधिक आकर्षक होती है। मिर्जापुर के मिट्टी के बर्तन का शिल्प इतना सटीक और सुंदर होता है कि ये अक्सर सजावट के लिए भी इस्तेमाल किए जाते हैं। स्थानीय कुम्हारों द्वारा निर्मित इन वस्तुओं में पारंपरिक शिल्प कला की गहरी छाप होती है, जो इसे अन्य स्थानों के बर्तनों से अलग बनाती है। मिर्जापुर के कालीन और हस्तशिल्प उद्योग के कारण यह शहर एक प्रमुख पर्यटन स्थल बन चुका है। पर्यटक यहाँ की कला, शिल्प और गुणवत्ता से मंत्रमुग्ध हो जाते हैं और इसे खरीदने के लिए यहां आते हैं। मिर्जापुर की ये कला और उद्योग न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करते हैं, बल्कि भारतीय संस्कृति और शिल्पकला की अनमोल धरोहर को भी संरक्षित रखते हैं।

मिर्जापुर का खानपान यहां के पर्यटन का एक महत्वपूर्ण और आकर्षक पहलू है। इस शहर का खाना न केवल स्वादिष्ट है, बल्कि यह भारतीय व्यंजनों की विविधता और सांस्कृतिक धरोहर को भी दर्शाता है। मिर्जापुर के खाने में विशेष रूप से उत्तर भारतीय और खासकर बनारसी स्वाद का मिश्रण देखने को मिलता है, जो स्थानीय संस्कृति से गहरे जुड़े हुए हैं। मिर्जापुर की सबसे प्रसिद्ध डिश है यहाँ की **कचौड़ी**। यह गरमागरम कचौड़ी आलू या दाल के मसालेदार भरावों के साथ परोसी जाती है और खासकर नाश्ते के समय इसे बड़े चाव से खाया जाता है। यहां की **चाट** भी बहुत प्रसिद्ध है, जिसमें पापड़ी, आलू, दही और मसाले का संयोजन एक अद्भुत स्वाद पैदा करता है। मिर्जापुर में मिलने वाली **लिट्टी चोखा** भी एक पारंपरिक व्यंजन है, जिसमें भुने हुए आटे की लिट्टी को घी में डुबोकर मसालेदार आलू, बैंगन, और टमाटर के चोखे के साथ खाया जाता है। मिर्जापुर का पान भी अपनी खास पहचान बनाए हुए है। यह मिठा पान विभिन्न प्रकार के मसालों और मिठाइयों के साथ सर्व किया जाता है और यह खाने के बाद ताजगी का अहसास कराता है। यहां के मिठे व्यंजन जैसे **गुलाब जामुन, काजा और मलाई चौरी** भी पर्यटकों के बीच बहुत लोकप्रिय हैं। मिर्जापुर का खानपान, यहां के सांस्कृतिक रंगों और स्वादों का सजीव चित्रण करता है, जो हर आगंतुक के दिल में अपनी छाप छोड़ जाता है। मिर्जापुर में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने कई कदम उठाए हैं। यहाँ आवागमन के लिए सड़क, रेल और जलमार्ग की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। विंध्याचल रेलवे स्टेशन और चुनार रेलवे स्टेशन से भारत के विभिन्न हिस्सों तक सीधा संपर्क स्थापित है। यहाँ पर्यटकों के लिए विभिन्न होटल, गेस्ट हाउस और धर्मशालाएँ उपलब्ध हैं।

निष्कर्षतः मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है, जो अपनी धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर के कारण पर्यटकों के बीच विशेष आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। यहां की प्राकृतिक सुंदरता, धार्मिक स्थल, और हस्तशिल्प उद्योग इसे एक आदर्श पर्यटन स्थल बनाते हैं। धार्मिक दृष्टि से मिर्जापुर में विंध्यवासिनी देवी का प्रसिद्ध मंदिर स्थित है, जो विशेष रूप से नवरात्रि के समय बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है। विंध्याचल क्षेत्र के अन्य प्रमुख धार्मिक स्थल जैसे कि रानी दुर्गावती मंदिर और काली देवता के मंदिर भी यहाँ आते हैं, जो भक्तों के लिए आस्था का केंद्र बने हुए हैं। इसके अलावा, मिर्जापुर का कालीन उद्योग और हस्तशिल्प भी पर्यटन में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। मिर्जापुर की कालीनों की उच्च गुणवत्ता और बारीक बुनाई ने इसे विश्वभर में एक खास स्थान दिलवाया है, जिससे यहां का शिल्प उद्योग भी पर्यटकों के आकर्षण का कारण बनता है। मिर्जापुर के कुम्हारों द्वारा बनाए गए मिट्टी के बर्तन और सजावटी सामान भी पर्यटकों द्वारा बहुत पसंद किए जाते हैं। प्राकृतिक सुंदरता और शांत वातावरण के कारण मिर्जापुर एक आदर्श स्थल है, जहाँ पर्यटक धार्मिक यात्रा के साथ–साथ संस्कृति और कला का आनंद भी ले सकते हैं। यहां के सजीव बाजार, स्थानीय खानपान, और परंपराएं इसे एक समृद्ध सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करती हैं। कुल मिलाकर, मिर्जापुर पर्यटन की दृष्टि से न केवल धार्मिक बल्कि सांस्कृतिक और शिल्पकला के लिए भी एक महत्वपूर्ण स्थल है।

****

नोट

नोट

शाश्वत ऊर्जा

इरेडा
IREDA

एक बार इरेडा, सदैव इरेडा
(नवरत्न सीपीएसई)

पंजीकृत कार्यालय/Registered Office
प्रथम तल, कोर-4-ए, ईस्ट कोर्ट, भारत पर्यावास केन्द्र, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003
दूरभाष/Phone : 011-24682206-19 फैक्स / Fax : +91-11-24682202

कॉर्पोरेट कार्यालय/Corporate Office
तीसरी मंजिल, अगस्त क्रान्ति भवन, भीकाएजी कामा प्लेस, नई दिल्ली-110066
दूरभाष / Phone : 011-26717400-12 फैक्स / Fax : +91-11-26717416

इरेडा व्यवसाय केन्द्र / IREDA Business Centre
एनबीसीसी कॉम्प्लेक्स, ब्लॉक नंबर 2, प्लेट बी, 7वीं मंजिल, पूर्वी किदवई नगर, नई दिल्ली-110023
दूरभाष/Phone : 011-24604157, 24347700 - 24347799

ई-मेल : cmd@ireda.in वेबसाइट : www.ireda.in

@IREDALimited @IREDALtd @iredaofficial